राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........
9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या, प्रयागराज, मिर्जापुर, गोरखपुर, बरेली, बुंदेलखंड, उत्तराखंड, देहरादून

सीतापुर, शनिवार, 06 दिसंबर 2025
वर्ष 14, अंक 233, पृष्ठ 04, मूल्य: 01 रुपया
www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद, दिल्ली, हरियाणा, चंडीगढ़, झारखण्ड, बिहार, मध्य प्रदेश, असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

खाद गड्ढों पर अतिक्रमण की शिकायत दो महीने से लंबित, राजस्व विभाग मौन..03

मनरेगा मजदूरों ने जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंप कर मजदूरी दिलाए जाने की मांग की..04

भगवत गीता कभी बैन करने वाला था रूस, वक्त का पहिया घूमा और आज उसे ही पुतिन ने सिर आंखों से लगाया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कहते हैं वक्त बहुत बलवान होता है. वक्त का पहिया एक न एक दिन जरूर घूमता है. भारत और रूस के संबंध में भी कुछ इसी तरह वक्त का पहिया घूमा है. भारत-रूस के संबधों ने फिर साबित किया कि समय की गति बहुत विचित्र होती है. यही कारण है कि रूस कभी भगवत गीता को बैन करने वाला था, मगर आज वही हिंदुओं की पवित्र ग्रंथ गीता पुतिन के हाथों में सुशोभित हो रही है. व्लादिमीर पुतिन अभी भारत दौरे पर हैं. प्रधानमंत्री मोदी ने बुधवार को रूसी राष्ट्रपति पुतिन का अपने आधिकारिक आवास, 7 लोक कल्याण मार्ग पर स्वागत किया. यहां पीएम मोदी ने पुतिन को भागवत गीता भेंट की. इससे 2011 की वो पुरानी याद ताजा हो गई, जब रूस की अदालत में गीता को बैन करने का मामला गया था।

जी हां, यह मामला 15 साल पुराना है. साल 2011 में रूसी प्रांत साइबेरिया में टॉम्स्क की अदालत में गीता का मामला पहुंचा था. उस वक्त भगवत गीता (भगवद्गीता) को बैन करने की मांग की गई थी. हालांकि, यह भगवत गीता की रूसी भाषा में अनुवादित प्रति थी. अदालत में भगवत गीता को 'उग्रवादी साहित्य' करार देकर बैन करने की मांग की गई थी. रूसी विदेश मंत्रालय भी मामले की जांच में जुटा था. उस वक्त इस मामले की वजह से भारत से लेकर रूस तक में आक्रोश दिखा था.

मगर देखिए वक्त ने कैसे करवट बदली. आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पुतिन को इसी ग्रंथ यानी गीता की रूसी भाषा में अनुवादित प्रति उपहार स्वरूप दी. अव्वल तो यह कि पुतिन ने भी इसे बड़े आदर से स्वीकार किया।

गीता पर 2011 में क्या हुआ था?

2011 में रूस की फेडरल सिक्योरिटी सर्विस ने रूसी भाषा वाली भगवत गीता को एक्स्ट्रीमिस्ट माना था. साइबेरियाई शहर टॉम्स्क में प्रॉसिक्यूटर चाहते थे कि गीता के इस एडिशन को 'एक्सट्रीमिस्ट' घोषित किया जाए. अगर ऐसा होता तो भागवत गीता तानाशाह हिटलर की 'मेन कैम्फ' जैसी कैटेगरी में आ जाती. इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस (इस्कॉन) से प्रकाशित 'भगवद्गीता ऐज इट इज' पर अदालती कार्यवाही हुई. रूसी अभियोजकों का दावा था कि इस ग्रंथ में इसे न मानने वालों के प्रति अपमानजनक टिप्पणियां हैं, जो सामाजिक वैमनस्य को बढ़ावा दे सकती हैं. मामला टॉम्स्क की अदालत में पहुंचा, जहां सुनवाई के दौरान रूस में रहने वाले हिंदू समुदाय और भारत सरकार ने कड़ा विरोध जताया।

भारत में भी हंगामा और आखिरकार जीत

इतना ही नहीं, भारत में संसद तक में इस मुद्दे पर हंगामा हुआ. उस वक्त के विदेश मंत्री रहे एसएम कृष्णा ने भी रूसी राजदूत से बात की थी. भारत में कई जगहों पर प्रदर्शन हुए थे. वैश्विक स्तर पर हिंदू संगठनों ने आवाज उठाई. आखिरकार, 28 दिसंबर 2011 को गीता की जीत हुई. रूसी अदालत ने गीता के खिलाफ दायर याचिका खारिज कर दी. अदालत ने माना कि हिंदुओं के पवित्र ग्रंथ में कोई एक्सट्रीमिस्ट कंटेंट नहीं है. हालांकि, उस वक्त खुद रूस के विदेश मंत्रालय ने कहा था कि भागवत गीता के टेक्स्ट पर कमेंट्री की जांच हो रही है, न कि खुद टेक्स्ट की।

15 साल में कैसे बदला खेल?

इस मामले का ट्रायल जून 2011 में शुरू हुआ था. भागवत गीता के रूसी अनुवाद को फेडरल लिस्ट ऑफ एक्सट्रीमिस्ट मटीरियल्स में डाले जाने का खतरा था. मगर अदालत के फैसले से यह संभव नहीं हो पाया. अदालत ने गीता को लीगल माना. समय बीता और अब 2025 में परिदृश्य पूरी तरह बदल चुका है. तभी तो रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की भारत यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने उन्हें भगवद्गीता की रूसी अनुवादित प्रति भेंट की।

रूस और भारत के बीच की गीता वाली गाथा

2011 का विवादः रूस में भगवद्गीता की 'ऐज इट इज' प्रति को एक्सट्रीमिस्ट मानकर बैन की मांग, लेकिन कोर्ट ने खारिज किया।

भारत का विरोधः भारत की संसद में हंगामा हुआ था. देशभर में प्रदर्शन हुए थेऔर कूटनीतिक दबाव भी डाला गया था.

हिटलर की किताब वाली कैटेगरीः अगर अदालत का फैसला गीता के खिलाफ आता तो यह हिटलर की किताब मेन कैंफ की तरह बैन वाली लिस्ट में चली जाती।

2025 में पुतिन को गिफ्टः 15 साल बाद उसी गीता की प्रति पीएम मोदी ने पुतिन को गिफ्ट की. यह भारत और रूस के बीच सांस्कृतिक कूटनीति का प्रतीक है।

महत्वः इस घटनाक्रम से यह साबित होता है कि भारत-रूस संबंध मजबूत समय के साथ ऐसे विवाद आते-जाते रहते हैं और दोनों देश आसानी से सुलझा लेते हैं।

घास काटने गई महिला की बेरहमी से हत्या, बांसबाड़ी में खून से लथपथ मिला शव...इलाके में दहशत

बिहार के सुपौल जिले में उस वक्त हड़कंप मच गया, जब एक विवाहिता का शव बांस बाड़ी से मिला। वहीं, सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच में जुट गई है।

घास काटने गई थी रंजू

जानकारी के मुताबिक, मामला जिले के नदी थाना क्षेत्र के ललमनिया पंचायत अंतर्गत लालपुर गांव का है। मृतका की पहचान ललमनिया पंचायत के लालपुर गांव निवासी रंजू कुमारी (21) के रूप में हुई है। वह अपने मायके में ही रहती थीं। बताया जा रहा है कि गुरुवार शाम को रंजू घास काटने खेत में गई थी, लेकिन देर रात तक वह घर नहीं लौटी। परिजनों ने उसकी काफी खोजबीन की, लेकिन उसका कुछ पता नहीं चला। शुक्रवार को रंजू का शव गांव से करीब 500 मीटर दूर एक बांस बाड़ी में खून से लथपथ मिला। शव मिलने के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई।

परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल

इधर, घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच में जुट गई है। मृतका के गले पर गहरे कटाव के निशान मिले हैं, जिससे आशंका जताई जा रही है कि हसुआ से गला रेतकर हत्या की गई है। फिलहाल, पुलिस सभी पहलुओं से मामले की जांच कर रही है। वहीं, इस घटना के बाद मृतका के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

भारत सड़क हादसे कम करने के लक्ष्य से फिर चूका, 2024 में 1.77 लाख लोगों की जान गई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली– भारत एक बार फिर सड़क दुर्घटना से होने वाली मौतों को कम करने के अपने लक्ष्य से चूक गया है. इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक, 2024 में सड़क हादसों में हुई मौतों की संख्या पिछले साल की तुलना में और बढ़ गई. सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी द्वारा गुरुवार (4 दिसंबर) को लोकसभा में पेश किए गए आंकड़ों के अनुसार, 2024 में सड़क दुर्घटनाओं में 1.77 लाख लोगों की मौत हुई, जो 2023 के मुकाबले 2.31% अधिक है. 2023 में 4.80 लाख सड़क दुर्घटनाओं में 1.73 लाख लोगों की मौत दर्ज हुई थी. यह आंकड़ा राज्य पुलिस द्वारा सरकार के इलेक्ट्रॉनिक डिटेल्ड एक्सिडेंट रिपोर्ट (e-DAR) पोर्टल पर डाले गए रियल-टाइम डेटा पर आधारित है. हालांकि मंत्री ने 2024 में कुल दुर्घटनाओं की संख्या नहीं बताई. फरवरी 2020 में हुई तीसरी ग्लोबल मिनिस्टीरियल कॉन्फ्रेंस ऑन रोड सेफ्टी में अपनाए गए स्टॉकहोम डिक्लेरेशन ऑन रोड सेफ्टी ने 2030 तक सड़क हादसों में होने वाली मौतों और चोटों को 50% तक कम करने का वैश्विक लक्ष्य तय किया है. भारत इस घोषणा पर हस्ताक्षर करने वाले देशों में शामिल है. फिर भी देश में सड़क हादसों और मौतों का आंकड़ा हर साल बढ़ ही रहा है।

केवल महामारी के वर्षों- 2020 और 2021 में इसमें अस्थायी कमी देखी गई थी. वर्ल्ड रोड स्टैटिस्टिक्स, जो एक गैर-लाभकारी संस्था है, के अनुसार सड़क हादसों में सबसे ज़्यादा लोगों की मौत वाले देशों की सूची में भारत अब भी शीर्ष पर है, इसके बाद चीन और अमेरिका का स्थान आता है. चीन में प्रति लाख आबादी पर सड़क हादसे से मौत की दर 4.3 है. अमेरिका में यह आंकड़ा 12.76 है, जबकि भारत में 11.89 है. गडकरी ने संसद को बताया कि सरकार ने सड़क हादसों और मौतों को कम करने के लिए '4E' - एजुकेशन (जागरूकता), इंजीनियरिंग, एन्फोर्समेंट (कानून का पालन) और इमरजेंसी केयर, पर आधारित एक रणनीति बनाई है. उन्होंने कहा, 'राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण में शामिल संरचनाओं के आधार पर समग्र सड़क सुरक्षा पर खर्च की जाने वाली धनराशि परियोजना की कुल लागत का 2.21% से 15% तक होती है.'

संक्षिप्त ख़बरें

लखनऊ में 11 साल के बच्चे की हार्ट अटैक से मौत, स्कूल में दे रहा था एग्जाम; अचानक फर्श पर गिर पड़ा

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के एक प्रतिष्ठित मोंटफोर्ट इंटर कॉलेज में शुक्रवार सुबह उस समय कोहराम मच गया, जब कक्षा छह का छात्र आरव सिंह परीक्षा देते-देते अचानक बेहोश होकर गिर पड़ा. कुछ ही मिनटों में उसकी सांसें थम गई. डॉक्टरों ने हार्ट अटैक से मौत का कारण बताया. महज 11 साल की उम्र में हुई इस दर्दनाक घटना ने पूरे स्कूल और परिजनों को स्तब्ध कर दिया. आरव के माता-पिता और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है. बेटे को याद कर मां बार-बार बेहोश हो जा रही हैं।

अचानक फर्श पर गिर पड़ा आरव

घटना सुबह करीब 10:45 बजे की है. कक्षा 6वीं की परीक्षा चल रही थी. आरव अपनी सीट पर बैठा प्रश्न-पत्र हल कर रहा था. अचानक वह कुर्सी से फर्श पर गिर पड़ा. सहपाठी और शिक्षकों ने तुरंत उसे उठाया तो पता चला कि उसकी सांसें बंद हो चुकी हैं. स्कूल प्रशासन ने फौरन एम्बुलेंस बुलाई और उसे नजदीक के बीआरडी मेडिकल कॉलेज (महानगर) के इमरजेंसी वार्ड में ले जाया गया।

इमरजेंसी टीम ने दिया C P R, पर नहीं बच पाई जान

बीआरडी अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. रंजीत दीक्षित ने बताया, 11:05 बजे मोंटफोर्ट स्कूल से 11 साल का बच्चा आरव सिंह अचेत अवस्था में लाया गया था. इमरजेंसी टीम ने तुरंत सीपीआर और अन्य जरूरी उपचार शुरू किए, लेकिन कोई रिस्पॉन्स नहीं मिला. करीब आधे घंटे के प्रयास के बाद उसे मृत घोषित करना पड़ा।

जानकीपुरम का रहने वाला था छात्र आरव

डॉक्टरों के अनुसार, प्रारंभिक जांच में कार्डियक अरेस्ट (हार्ट अटैक) के संकेत मिले हैं. हालांकि मौत का सटीक कारण पोस्टमार्टम और डेथ ऑडिट रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट हो पाएगा. आरव के पिता संदीप सिंह जानकीपुरम के रहने वाले हैं. जैसे ही उन्हें सूचना मिली, वे अस्पताल पहुंचे, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. आरव के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है. मां की हालत देखकर अस्पताल स्टाफ भी भावुक हो गया।

स्कूल में परीक्षाएं स्थगित की गई

घटना पर स्कूल प्रबंधन ने गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा कि यह बेहद दुखद और अप्रत्याशित घटना है. स्कूल में आज सभी परीक्षाएं स्थगित कर दी गई और बच्चों को छुट्टी दे दी गई. कई बच्चे सदमे में हैं और काउंसलिंग की व्यवस्था की जा रही है. पिछले कुछ सालों में बच्चों में हार्ट अटैक की बढ़ती घटनाएं चिंता का विषय बनती जा रही हैं।

मुजफ्फरपुर में BJP नेता पर फायरिंग, शादी से लौटते समय बाइक सवार बदमाशों ने मारी गोली, हालत गंभीर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिहार के मुजफ्फरपुर में भाजपा नेता विनोद दास पर बाइक सवार बदमाशों ने ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी. गोलीबारी की घटना में विनोद दास गंभीर रूप से घायल हो गए. इलाज के लिए उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है. पुलिस जांच में जुटी गई है. घटना के बाद से कानून व्यवस्था पर सवाल उठ रहे हैं. विनोद दास पूर्व मंत्री केदार गुप्ता के पीए हैं. गृह मंत्री बनते ही डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने अपराधियों को सख्त संदेश दिया था कि या तो अपराध छोड़ दो या बिहार छोड़ दो. लेकिन मुजफ्फरपुर में अपराधियों के हौसले फिर से बुलंद दिखाई दे रहे हैं. अमरख के पास भाजपा नेता पर फायरिंग कर अपराधियों ने एक बड़ी वारदात को अंजाम दिया।

बीजेपी नेता पर फायरिंग

मनियारी थाना क्षेत्र के अमरख पंचायत

के सीतारामपुर लीची गाछी के पास गुरुवार की रात अज्ञात बाइक सवार अपराधियों ने BJP के पूर्व मंडल अध्यक्ष विनोद दास पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी. घटना उस वक्त हुई जब वह एक शादी समारोह से बाइक से घर लौट रहे थे. पहले से घात लगाए बैठे अपराधियों ने उन पर हमला कर दिया. गोलियों की आवाज सुनते ही इलाके में अफरा-तफरी मच गई. ग्रामीणों ने गंभीर रूप से घायल विनोद दास को तुरंत एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उनकी हालत नाजुक बनी हुई है।

शादी समारोह से लौटते पर हुआ हमला

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, दो बाइक सवार अपराधियों ने पहले पीछा किया, फिर अमरख के पास ओवरटेक कर विनोद दास को रोका और उन पर फायरिंग कर दी. वारदात को अंजाम देकर अपराधी फरार हो गए. सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई. आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं।

सीसीटीवी खंगाल रही पुलिस

विनोद दास कुढ़नी विधायक और पूर्व पंचायती राज मंत्री केदार गुप्ता के करीबी हैं. अचानक हुई इस वारदात ने एक बार फिर सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं. अपराधी खुलेआम कानून-व्यवस्था को चुनौती देते नजर आ रहे हैं. मामले पर ग्रामीण एसपी राजेश सिंह प्रभाकर ने बताया कि भाजपा नेता विनोद दास को अपराधियों ने गोली मारी है. छानबीन की जा रही है, आसपास के सीसीटीवी को खंगाला जा रहा हैं. अपराधियों को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

कफ सिरप केसः कहां है विकास सिंह नरवे? ED की जांच 6 राज्यों में पहुंची, अबतक 118 FIR दर्ज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कोडीनयुक्त नशीले कफ सिरप पीने से कई बच्चों की मौत के बाद जांच एजेंसियां पूरे रैकेट की परतें खोलने में जुट गई हैं. इसी कड़ी में प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने इस मामले में प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (PMLA) के तहत केस दर्ज कर लिया है और बड़े स्तर पर जांच शुरू कर दी है. अब जांच का दायरा उत्तर प्रदेश से बढ़कर मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा और झारखंड तक फैल गया है. ED ने यूपी के खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन (FSDA) से अब तक की गई सभी कार्रवाई और संबंधित दस्तावेजों की पूरी रिपोर्ट भी मांगी है. सूत्रों के अनुसार इस सिंडिकेट ने फर्जी फर्मों के माध्यम से अरबों रुपये का कोडीन बेस्ड कफ सिरप अवैध रूप से नेपाल और बांग्लादेश तक भेजा. चौंकाने वाली बात यह है कि तस्करी नेटवर्क में कुछ निर्माता कंपनियों के साथ-साथ FSD के कुछ अधिकारी भी शामिल पाए गए हैं, जिन्होंने या तो इस कारोबार पर कार्रवाई नहीं की या फिर सीधे सहयोग किया।

शुभम जायसवाल को ED ने 8 दिसंबर को तलब किया

ED ने बुधवार को केस दर्ज करते ही वाराणसी के मुख्य आरोपी शुभम जायसवाल के घर पर समन चस्पा कर दिया. एजेंसी ने उसे 8 दिसंबर को पूछताछ के लिए उपस्थित होने का आदेश दिया है. इसके अलावा जेल में बंद आरोपियों आलोक सिंह और अमित सिंह टाटा से भी ED पूछताछ करेगी. इन दोनों ने स्न्नस्न को दिए अपने बयान में शुभम जायसवाल और आजमगढ़ के विकास सिंह नरवे का नाम लिया था।

दो चार्टर्ड अकाउंटेंट भी जांच के घेरे में

ED की जांच में दो चार्टर्ड अकाउंटेंट–तुषार और विष्णु अग्रवाल–के नाम भी सामने आए हैं. ये दोनों आरोपी फर्मों के वित्तीय लेनदेन से जुड़े दस्तावेज तैयार करते थे और फर्जी बिलिंग के जरिए मनी लॉन्ड्रिंग को अंजाम दिलाते थे. ED जल्द ही इन दोनों को भी समन भेजकर पूछताछ करेगी।

कहां-कहां दर्ज हुए 118 मुकदमे?

इस पूरे मामले में अब तक कुल 118 FIR दर्ज की जा चुकी हैं, जिनमें वाराणसी में 38, जौनपुर में 16, कानपुर नगर में 8, गाजीपुर में 6, लखीमपुर खीरी में 4 और लखनऊ में 3 केस शामिल हैं. अन्य जिलों में 43 मुकदमे दर्ज किए गए हैं।

विकास सिंह नरवे अब भी फरार

सिंडिकेट का अहम सदस्य माने जाने वाला आजमगढ़ का विकास सिंह उर्फ नरवे पिछले पांच दिनों से STF की पकड़ से दूर है. सूत्रों के अनुसार नरवे किसी माफिया के संरक्षण में दुबई भागने की फिराक में है. ED अब सभी निर्माता कंपनियों का प्रोडक्शन रिकॉर्ड, लाइसेंस और बैंक ट्रांजेक्शन खंगाल रही है. तस्करी का तरीका बेहद संगठित था. हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा और झारखंड की कुल सात निर्माता कंपनियों से भारी मात्रा में कोडीन युक्त सिरप खरीदा जाता था. फिर यूपी के लखनऊ, कानपुर, लखीमपुर, बहराइच से नेपाल और वाराणसी-गाजियाबाद की फर्मों के जरिए बांग्लादेश भेजा जाता था. ज्यादातर फर्में केवल बिलिंग के लिए बनाई गई थीं, न इनके पास गोदाम थे न स्टॉक।

पहलगाम हमला... P M मोदी ने पुतिन के सामने बताई क्या है आतंकवाद की असली जड़?

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

रूस के राष्ट्रपति पुतिन का भारत दौरे का दूसरा दिन है. आज पीएम मोदी ने प्रेसिडेंट व्लादिमीर पुतिन के साथ जॉइंट प्रेस मीट की. इसमें प्रधानमंत्री ने कहा, मेरे दोस्त प्रेसिडेंट पुतिन, दोनों देशों के डेलीगेट्स, मुझे 23वें इंडिया-रूस बाइलेटरल समिट के लिए प्रेसिडेंट पुतिन का स्वागत करते हुए खुशी हो रही है. पच्चीस साल पहले प्रेसिडेंट पुतिन ने हमारी स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप की नींव रखी थी. भारत और रूस ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं के स्ट्रेटेजिक एरिया में सहयोग बढ़ाने का प्लान पक्का किया है. पीएम ने इस दौरान पहलगाम आतंकी हमले का भी जिक्र किया. उन्होंने कहा कि पहलगाम में हुआ आतंकी हमला हो या क्रोकस सिटी हॉल पर किया गया कायरतापूर्ण आघात, इन सभी घटनाओं की जड़ एक ही है. पीएम मोदी ने कहा, श्रम-दूर संचार क्षेत्र में भारत-रूस में समझौते के साथ ही आज राष्ट्रपति पुतिन और मुझे इंडिया-रूस बिजनेस फोरम में शामिल होने का अवसर मिलेगा. मुझे पूरा विश्वास है कि ये मंच हमारे व्यापार संबंधों को नई ताकत देगा. इससे एक्सपोर्ट, को-प्रोडक्शन और को-इनोवेशन के नए दरवाजे भी खुलेंगे।

हमारा रिश्ता हर हालात में समय की कसौटी पर खरा उतरा

प्रधानमंत्री ने कहा, दोनों पक्ष यूरेशियन इकॉनॉमिक यूनियन के साथ एफटीए के जल्द समापन के लिए प्रयास कर रहे हैं. पिछले आठ दशकों में दुनिया ने कई उतार-

चढ़ाव देखे हैं. इंसानियत ने कई चुनौतियों और संकटों का सामना किया है. इन सबके बीच भारत और रूस की दोस्ती एक गाइडिंग स्टार की तरह स्थिर रही है.आपसी सम्मान और गहरे भरोसे पर बना हमारा रिश्ता हर हालात में समय की कसौटी पर खरा उतरा है. पीएम ने कहा, मुझे खुशी है कि जल्द ही हम रूसी नागरिकों के लिए निःशुल्क 30-Day E-Tourist Visa और 30-Day Group Tourist Visa की शुरुआत करने जा रहे हैं. मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में हमारी मित्रता हमें ग्लोबल चैलेंजेस का सामना करने की शक्ति देगी. यही भरोसा हमारे साझा भविष्य को और समृद्ध करेगा।

इन सभी घटनाओं की जड़ एक ही है

उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत और रूस ने लंबे समय से कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग किया है. पहलगाम में हुआ आतंकी हमला हो या क्रोकस सिटी हॉल पर किया गया कायरतापूर्ण आघात, इन सभी घटनाओं की जड़ एक ही है. भारत का अटल विश्वास है कि आतंकवाद मानवता के मूल्यों पर सीधा प्रहार है और इसके विरुद्ध वैश्विक एकता ही हमारी सबसे बड़ी ताक़त है. पीएम मोदी ने कहा कि यूक्रेन के संबंध में भारत ने शुरुआत से शांति का पक्ष रखा है. हम इस विषय के शांतिपूर्ण और स्थाई समाधान के लिए किए जा रहे सभी प्रयासों का स्वागत करते हैं. भारत सदैव अपना योगदान देने के लिए तैयार रहा है और आगे भी रहेगा. इस साल अक्टूबर में लाखों श्रद्धालुओं को काल्मिकिया में International Buddhist Forum मे भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों का आशीर्वाद मिला. उन्होंने कहा कि अब हम भारत के Seafarers ·¤è Polar Waters में ट्रेनिंग के लिए सहयोग करेंगे. यह आर्कटिक में हमारे सहयोग को नई ताकत तो देगा ही. साथ ही इससे भारत के युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर बनेंगे।

भारत यूक्रेन संघर्ष को लेकर तटस्थ नहीं

इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने यूक्रेन युद्ध को खत्म करने की ताजा कोशिशों का पुरजोर समर्थन किया. राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को यह संदेश दिया कि भारत इस संघर्ष का समाधान निकालने के लिए शांति प्रयासों में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा रहेगा. मोदी ने शिखर वार्ता में अपने संबोधन की शुरुआत में कहा कि भारत यूक्रेन संघर्ष को लेकर तटस्थ नहीं है, बल्कि इसे करने के लिए शांति का पक्षधर है. प्रधानमंत्री ने कहा, यूक्रेन संघर्ष शुरू होने के बाद से हम चर्चा करते रहे हैं. एक करीबी दोस्त के रूप में आप हमें स्थिति के बारे में नियमित रूप से जानकारी देते आए हैं. मुझे लगता है कि यकीन एक बड़ी ताकत है. हम सभी को शांति का रास्ता तलाशना चाहिए।

आजम खान के बेटे अब्दुल्ला को पासपोर्ट मामले में झटका, 7 साल की सजा, 50 हजार का लगा जुर्माना

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

समाजवादी नेता आजम खान के बेटे पूर्व विधायक अब्दुल्ला आजम को पासपोर्ट मामले झटका लगा. शुक्रवार को वीसी से अब्दुल्ला आजम की रामपुर की एमपी एमएलए कोर्ट में पेशी हुई. कोर्ट ने 7 साल की सजा और 50 हजार का जुर्माना लगाया है. भाजपा विधायक आकाश सक्सेना ने सिविल लाइंस कोतवाली में प्राथमिकी दर्ज कराई थी, जिसमें अब्दुल्ला पर अलग-अलग जन्मतिथि से दो पासपोर्ट बनवाने का आरोप हैं. आरोप था कि असत्य एवं कूटरचित दस्तावेजों के आधार पर पासपोर्ट बनवाया गया और उसे उपयोग में भी लाया गया. अब्दुल्ला आलम की यह तीसरी सजा है. इससे पहले, बर्थ सर्टिफिकेट एवं दो पैन कार्ड मामले में भी सजा मिल चुकी है. दो पासपोर्ट मामले में अब्दुल्ला आजम पर चल रहा यह केस काफी लंबे समय से सुर्खियों में रहा है. जिसपर शुक्रवार को फैसला आ गया. अब्दुल्ला आजम पर आरोप है कि उन्होंने दो अलग-अलग जन्मतिथियों को आधार बनाकर दो पासपोर्ट बनवाए थे।

भाजपा विधायक ने दर्ज कराई थी शिकायत

इस मामले में भारतीय जनता पार्टी के एमएलए आकाश सक्सेना की ओर से सिविल लाइंस कोतवाली में एफआईआर दर्ज कराई गई थी. विधायक की ओर से दर्ज शिकायत में कहा गया था कि अब्दुल्ला आजम ने कूटरचित और असत्य दस्तावेजों का इस्तेमाल कर पासपोर्ट हासिल किया और इसका इस्तेमाल किया है. पुलिस जांच यह पता चला कि अब्दुल्ला आजम के एक पासपोर्ट में जन्मतिथि 1 जनवरी 1993 है, तो दूसरे पासपोर्ट में जन्मतिथि 30 सितंबर 1990 है. अब्दुल्ला आलम का दूसरा पासपोर्ट (संख्या z 4307442) 10 जनवरी 2018 को जारी किया गया था, जिसे गलत जानकारी के आधार पर जब्त कर लिया गया. पुलिस जांच के बाद अब्दुल्ला आजम को आरोप पत्र में नामजद हुआ. यह मामला एमपी-एमएलए स्पेशल कोर्ट (मजिस्ट्रेट ट्रायल) में चल रहा है और शुक्रवार को अब्दुल्ला आजम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए जेल से ही अदालत में पेश हुए।

अब्दुल्ला को 7 साल की सजा और जुर्माना

यह केस MP-MLA स्पेशल कोर्ट (मजिस्ट्रेट ट्रायल) में चल रहा है. गवाहों के बयान और पिछले हफ्ते अभियोजन पक्ष की बहस समाप्त हो गई थी. कोर्ट ने बचाव पक्ष को 1 दिसंबर तक बहस करने का मौका दिया था. इसके बाद कोर्ट की ओर से फैसला सुनाया गया और अब्दुल्ला आजम पर 7 साल की जेल और 50 हजार रुपए का जुर्माना लगाया गया।

इंसानियत गुम, व्यवस्था मौन– फिर हुआ एक कैदी फरार

[कैदी भागा नहीं, असंवेदनशीलता ने धक्का दिया]
[कैदी, पुलिस और सिस्टम — कहानी सवालों की, जवाबों की नहीं]

इंदौर मप्र के एमवाय अस्पताल से कैदी विशाल का फिल्मी अंदाज़ में फरार होना भले ही सनसनीखेज़ लगे, लेकिन इसकी परतें हमारे सिस्टम की गहरी टूट-फूट को साफ़ उजागर करती हैं। इंदौर जिला अदालत से फरार कैदी विशाल की ओर से आत्मसमर्पण के लिए आवेदन दिया गया जिसमें फरार कैदी विशाल की ओर से बताया – 'इलाज के दौरान मेरी पत्नी मिलने आई थी, लेकिन पुलिस ने मिलने नहीं दिया। उल्टा अपशब्द कहकर भगा दिया। उसी अपमान और आहत मन से 'पुलिस को सबक सिखाने' की ठानकर मैं भागा।' उसकी यह बात केवल एक कैदी की व्यथा नहीं, बल्कि उस संवेदनहीन व्यवस्था का प्रतिबिंब है जो इंसानी भावनाओं को अक्सर प्रक्रियाओं और कठोरता के नीचे दबा देती है। हालाँकि, सच्चाई कई परतों में दबी होती है–उसका कथन कितना सही है, यह तो जाँच के बाद ही स्पष्ट होगा अस्पताल में इलाज के दौरान पुलिसकर्मियों द्वारा उसे पत्नी से मिलने से रोकना और उस पर अभद्र भाषा का प्रयोग करना–यह आरोप चौंकाने से ज़्यादा चिंतित करता है। हमारे समाज में अक्सर यह गलत धारणा देखी जाती है कि कैदी होने का मतलब सारे अधिकार खो देना है। जबकि कानून व्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित करता है, उसकी इंसानियत या सम्मान नहीं। यदि पुलिस इस मूलभूत अंतर को समझने में ही असफल रहे, तो खोट कानून में नहीं, उसके रखवालों की सोच में है। ऐसी सोच न सिर्फ व्यवस्था को कलंकित करती है, बल्कि यह बताती है कि कहीं न कहीं वर्दी का कठोरपन मन की संवेदनाओं पर भारी पड़ चुका है। क्या हमारी पुलिस को यह बुनियादी मानवीय फर्क समझाने का, संवेदनशीलता सिखाने का, और अधिकारों की मर्यादा समझाने का पर्याप्त प्रशिक्षण मिलता है? कटु सत्य ये है–नहीं। और इसी 'नहीं' ने आज देशभर की पुलिस-व्यवस्था में एक ऐसी खाई बना दी है जहाँ नियम तो कड़े हैं, पर संवेदना नदारद है। वर्षों से विशेषज्ञ लगातार चेतावनी दे रहे हैं कि पुलिस प्रशिक्षण का स्वरूप बदलना होगा–उसे बल आधारित नहीं, मन-व्यवहार आधारित, मानवाधिकार केंद्रित, और संवेदनशीलता पर टिके ढांचे में ढालना होगा। जब तक पुलिस केवल कठोरता और शक्ति सीखती रहेगी, पर संवेदनशीलता और संयम नहीं–ऐसे हादसे अपवाद नहीं, दोहराई जाने वाली त्रासदियाँ बनेंगे। चार दिन तक गायब रहने वाले कैदी ने अदालत में बताया कि पुलिसकर्मियों के व्यवहार ने उसे इतना आहत किया कि उसने सिस्टम को 'सबक' सिखाने का मन बना लिया। चिंताजनक यह है कि अस्पताल जैसी सुरक्षित मानी जाने वाली जगह से एक कैदी यूँ ही ओझल हो जाता है और पुलिस चार दिनों तक उसके निशान तक नहीं पा पाती। यह महज़ सुरक्षा में चूक नहीं–यह व्यवस्था की सुस्ती, लापरवाही और ढीली पड़ती जिम्मेदारी का सीधा सबूत है। और जब जिम्मेदारी सो जाए, तो अपराधी नहीं–तंत्र खुद कटघरे में खड़ा दिखाई देता है। एक आरोपी को इलाज के दौरान अपनी पत्नी से मिलने से रोक देना–आखिर यह किस कानून में लिखा है? कानून सीमाएँ तय करता है, भावनाएँ नहीं कुचलता। लेकिन जब पुलिस का रवैया मनमानी और कठोरता की हदें पार करने लगे, तो अपराधी और पीड़ित के बीच की रेखा धीरे-धीरे धुंधली पड़ने लगती है। यहाँ भी वही हुआ–एक कैदी अस्पताल के बिस्तर पर बीमारी से कम, और पुलिस की असंवेदनशीलता से मिले अदृश्य घावों से ज़्यादा लड़ रहा था। यह घटना बताती है कि कभी-कभी सबसे गहरे घाव हथकड़ियाँ नहीं, व्यवहार दे जाते हैं। चार दिन बाद कैदी विशाल का खुद अजाक अदालत पहुँचकर आत्मसमर्पण कर देना यह बड़ा संदेश देता है कि सिस्टम चाहे जितना कठोर और असंवेदनशील क्यों न हो जाए, कानून पर भरोसे की लौ अब भी बुझी नहीं है। लेकिन क्या हर बार व्यवस्था इतनी किस्मतवाली होगी कि आरोपी स्वयं आकर अपने अपराधों का हिसाब सौंप दे? असली संकट तो तब खड़ा होता है जब पुलिस का व्यवहार ही अपराध को जन्म देने लगे–क्योंकि फिर सवाल उठता है, न्याय की मांग आखिर किस दरवाज़े पर की जाए? पुलिस ने जांच बिठाने की बात तो कही है–अस्पताल की सुरक्षा में कहाँ कमी रह गई? ड्यूटी पर मौजूद कर्मियों का व्यवहार कैसा था? क्या कैदी के साथ कोई अनुचित स्थिति बनी? सवाल कई हैं, पर हमारे यहाँ 'जांच' अक्सर सच को सामने लाने की बजाय उसे परतों में सहेज देने का माध्यम बन जाती है। असली चिंता यह है कि जब जांच का दायरा संदेहों को मिटाने की जगह उन्हें अनुत्तरित ही छोड़ दे, तो न्याय का रास्ता धुंधला पड़ने लगता है। क्योंकि व्यवस्था पर भरोसा तभी टिकता है, जब जांच केवल औपचारिकता न होकर, सच्चाई तक पहुँचने का साहस भी रखे। कैदी होना किसी मनुष्य के अधिकारों को समाप्त नहीं करता; यह केवल उसकी स्वतंत्रता को सीमित करता है। इसलिए पुलिस को सिर्फ कठोरता नहीं, बल्कि संवेदनशीलता और मानवीय समझ का प्रशिक्षण चाहिए। अस्पतालों की सुरक्षा व्यवस्था मज़ाक बनने के लिए नहीं, बल्कि मानक और जवाबदेही पर आधारित होने के लिए होती है। और जब तक जिम्मेदारी तय नहीं होगी, किसी भी सुधार की संभावना सिर्फ ख़याल भर रह जाएगी। कभी-कभी व्यवस्था की छोटी-सी ढिलाई ही इतना बड़ा रूप ले लेती है कि वह स्वयं अपराध से भी अधिक भयावह दिखाई देने लगती है। जब तक सिस्टम के भीतर मानवीयता की लौ फिर से नहीं जलेगी, ऐसे 'फरार' यूँ ही होते रहेंगे–और हम बस हैरानी में खड़े रह जाएंगे। यह उस तंत्र की दास्तान है जिसने शक्ति के घमंड में इंसानी पीड़ा सुनने की क्षमता खो दी है; उस पुलिस व्यवस्था की कहानी है जो यूनिफ़ॉर्म की कठोरता को संवेदनहीनता का कवच बनाकर हर व्यवहार को 'ड्यूटी' का नाम दे देती है; और उस समाज का चेहरा है जो हर घटना पर क्षणभर ठहरकर अगले ही दिन चुपचाप पन्ना पलट देता है। जब तक व्यवस्था में इंसानियत दोबारा जागेगी नहीं, तब तक 'फरार' सिर्फ कैदी नहीं–हमारी संवेदनाएँ, हमारी जवाबदेही और हमारा विवेक होंगे।

प्रो. आरके जैन

संपादकीय

वैदिक परंपरा के युवा संवाहक देवव्रत महेश रेखे

भारतीय संस्कृति का यह स्वभाव रहा है कि वह समय-समय पर अपने भीतर से ऐसे दीपक जलाती है, जो केवल परंपरा को रोशन नहीं करते, बल्कि नई पीढ़ी की दिशा भी तय करते हैं। आधुनिक भारत में, जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स और तकनीक की चकाचौंध युवाओं को एक नए प्रकार की गति और प्रतिस्पर्धा में धकेलती है, वहीं 19 वर्षीय देवव्रत महेश रेखे का संकल्प भारतीय आत्मा की गहनतम परतों को स्पंदित करता है। वैज्ञानिक प्रगति और आध्यात्मिक साधना के इस कालखंड में उनकी उपलब्धि एक प्रश्न की तरह उभरती है क्या वास्तव में परंपरा पीछे छूट रही है, या वह चुपचाप नए साधकों की प्रतीक्षा कर रही है? देवव्रत ने शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा के लगभग 2000 मंत्रों वाले 'दण्डकर्म पारायणम्' का अखंड 50 दिनों तक पाठ कर एक ऐसी साधना को पुनर्जीवित किया है, जिसे वैदिक पद्धति का मुकुट कहा जाता है। यह केवल एक आध्यात्मिक उपलब्धि नहीं, बल्कि स्मृति, स्वर-शुद्धि, उच्चारण, धैर्य और अनुशासन का संगम है वह तप जो प्राचीन गुरुकुल पद्धति की आत्मा में बसता था। दण्डकर्म पारायणम् की जटिलता इतनी अधिक है कि इसे वेदपाठ की सर्वोच्च विधि माना गया है, और इसकी कठिनाई का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि लगभग दो सदियों से यह सार्वजनिक रूप से किसी युवा साधक द्वारा संपन्न नहीं हुआ था। देवव्रत ने न केवल इसे पूरा किया, बल्कि सबसे कम समय में पूर्ण करने का कीर्तिमान स्थापित किया। भारतीय संस्कृति में वेद केवल धार्मिक अनुष्ठानों के सूत्र नहीं, बल्कि जीवन के सार को प्रकट करने वाले ध्वनि-बीज हैं। शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा विशेष रूप से उत्तर भारत में विकसित हुई और अपनी शुद्धता के लिए प्रतिष्ठित है। इस शाखा के मंत्र न केवल यज्ञीय परंपरा को मार्गदर्शन देते हैं, बल्कि प्रकृति, समाज और मानव आत्मा के संतुलन का भी विधान प्रस्तुत करते हैं। इन मंत्रों को अखंड, त्रुटिरहित और पूर्ण स्वर-मात्रा के साथ 50 दिनों तक लगातार सुनाना केवल अभ्यास का प्रश्न नहीं, बल्कि आंतरिक अनुशासन का सर्वोच्च रूप है। यही वह साधना है जिसमें एकाग्रता को व्रत और ज्ञान को तप माना जाता है। देवव्रत की यात्रा एक दिन में निर्मित नहीं हुई। महाराष्ट्र के एक साधारण ब्राह्मण परिवार में जन्मे इस युवा के पहले गुरु उनके पिता महेश चंद्रकांत रेखे ही रहे, जिन्होंने बचपन से ही उन्हें वेदमंत्रों का अभ्यास सिखाया। सामान्यतः शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा को कंठस्थ करने में 12 से 15 वर्ष लग जाते हैं, परंतु देवव्रत ने इसे लगभग आठ-नौ वर्षों में ही पूरा कर लिया। यह गति उनके जन्मजात स्मरण, अथक अभ्यास और सबसे बढ़कर उनके भीतर के श्रद्धाभाव का परिणाम है। वाराणसी के वल्लभराम शालिग्राम सांगवेद विद्यालय में वे प्रतिदिन चार घंटे के कठोर अभ्यास से अपने तप को पूर्णता की ओर ले जाते रहे। यह साधना केवल मंत्रों के क्रम को याद रखने भर की प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि प्रत्येक ध्वनि की आत्मा को महसूस करने का प्रयास थी यही वह भाव है जिसे भारतीय परंपरा 'स्वाध्याय' कहती है। गुरु-शिष्य परंपरा हमेशा भारतीय शिक्षा-पद्धति की रीढ़ रही है। यहाँ ज्ञान केवल सूचना नहीं होता, बल्कि संस्कारों का वाहक माना जाता है। देवव्रत की सफलता उनके गुरुजनों की तपस्या और मार्गदर्शन का ही प्रतिफल है। गुरुकुलों में शिक्षा का अर्थ पेशेवर लक्ष्य नहीं, बल्कि चरित्र, अनुशासन और निष्ठा का विकास होता है। आज जब शिक्षा अक्सर केवल रोजगार की तैयारी बनकर रह गई है, तब देवव्रत जैसे युवा इस बात के प्रमाण हैं कि अध्ययन तभी सार्थक होता है जब वह जीवन के मूल्यों को मजबूत करे। उनकी इस साधना को राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान तब मिला जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं उनकी प्रशंसा की और इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बताया। यह स्वीकार्यता केवल एक साधक का सम्मान नहीं है यह भारतीय ज्ञान परंपरा की उस धारा की पहचान है, जिसे आधुनिकता की बाढ़ में अक्सर हाशिये पर धकेला जाता रहा है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित अनेक विद्वानों और संतों ने भी उनकी प्रशंसा की, जिससे यह उपलब्धि केवल व्यक्तिगत न रहकर सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यता का विषय बन गई। आज का समय विरोधाभासों का समय है। एक ओर युवा तकनीक और वैश्विक अवसरों की ओर अग्रसर हैं, दूसरी ओर संस्कृति का आधार कमजोर होता प्रतीत होता है। किंतु ऐसे उदाहरण यह स्पष्ट करते हैं कि परंपरा को जीवित रखने के लिए सदियों पुरानी विधियों को अद्यतन करने की आवश्यकता नहीं उन्हें साधने वाले हाथ और हृदय चाहिए। देवव्रत का संकल्प इसी तथ्य का प्रमाण है कि भारतीयता किसी पुस्तकालय में बंद ग्रंथ नहीं है, बल्कि जीवंत साधना है, जिसे हर पीढ़ी अपने तरीके से आगे बढ़ाती रही है। उनकी उपलब्धि एक गहरा प्रश्न भी खड़ा करती है क्या आधुनिक भारत अपनी जड़ों को पहचानने के लिए तैयार है? क्या युवाओं में वह धैर्य, वह निष्ठा, वह सन्नद्धता अब भी मौजूद है जो एकाग्र होकर साधना कर सके? देवव्रत का उदाहरण इसका सकारात्मक उत्तर है। वह दिखाते हैं कि ज्ञान तभी जीवित रहता है जब वह नई पीढ़ी की धमनियों में बहता है। परंपरा में नई ऊर्जा तभी आती है जब कोई युवा उसे पुनः धारण करता है और अपने भीतर आत्मसात करता है। 50 दिनों का यह अखंड पाठ केवल एक अनुष्ठान नहीं था; यह समय, मन और शरीर तीनों पर विजय का वह रूप था जिसे भारतीय आध्यात्मिकता सदियों से 'तप' कहती आई है। आज महानगरों के शोर में वेदों की ध्वनि भले क्षीण हो गई हो, किंतु देवव्रत जैसे साधक यह आश्वासन देते हैं कि यह ध्वनि कभी मौन नहीं होगी। जब भी संस्कृति के पुनर्जागरण की बात होगी, जब भी वेद-रक्षा और गुरु-शिष्य परंपरा का उदाहरण दिया जाएगा, तब इस युवा साधक का नाम आदर से लिया जाएगा।

महेन्द्र तिवारी

जिद पर अड़े नक्सली अब नहीं बच पाएंगे मुख्यधारा से जुड़ने का समय निकल रहा है

छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा और बीजापुर जिले एक बार फिर देश की सुरक्षा एजेंसियों की निर्णायक कार्रवाई के केंद्र में हैं। वेस्ट बस्तर डिवीजन के घने जंगलों में पिछले दो दिनों में हुई मुठभेड़ों ने नक्सलवाद के उस ढहते ढाँचे को उजागर कर दिया है, जो अभी भी हिंसा और विचारधारा की जिद पकड़े हुए है। सरकार वर्ष 2026 तक नक्सलवाद के अड्डों को पूरी तरह मुक्त करने के लक्ष्य के साथ अभियान को तेज कर चुकी है। इसी रणनीति का हिस्सा रहा गंगालूर थाना क्षेत्र में किया गया नवीनतम सर्च ऑपरेशन, जिसमें 12 कुख्यात माओवादी मारे गए और तीन बहादुर जवान शहीद हुए।यह मुठभेड़ मात्र एक और अभियान नहीं, बल्कि उन घटनाओं की श्रृंखला का हिस्सा है जो नक्सली नेतृत्व की लगातार कमजोर होती स्थिति की पुष्टि करती है। सुरक्षा बलों की ओर से बढ़ती घेराबंदी, नई तकनीक, बेहतर खुफिया तंत्र और स्थानीय सहयोग ने नक्सलियों की गतिविधियों को सीमित कर दिया है। यही वजह है कि 2026 का सरकारी अल्टीमेटम, जिस पर लंबे समय से सुरक्षा एजेंसियां काम कर रही थीं, अब नक्सली संगठन के भीतर भय का कारण बन चुका है।हिड़मा के मारे जाने से नक्सलियों में हड़कंप मच गया है।इस अभियान में जिस एक नाम ने पूरे नक्सली ढांचे को झकझोर दिया, वह है कुख्यात माओवादी कमांडर हिड़मा। बस्तर का यह खूंखार चेहरा पिछले एक दशक में कई बड़े हमलों का मास्टरमाइंड रहा। उसकी पत्नी का भी मुठभेड़ में ढेर होना इस बात का संकेत है कि नक्सली अब पहले की तरह सुरक्षित ठिकानों में छिपे नहीं रह पा रहे हैं।हिड़मा एक प्रतीक था।नक्सली हिंसा, जिद और जंगल शासन का प्रतीक। उसका मारा जाना नक्सलवाद की रीढ़ पर गहरी चोट मानी जा रही है। विशेषज्ञों के अनुसार, हिड़मा के खात्मे के बाद नक्सलियों का मनोबल टूटना स्वाभाविक है क्योंकि वह बस्तर में कई डिवीजनों को जोड़ने वाली केंद्रीय कड़ी था।गंगालूर और पश्चिम बस्तर में लगातार दबाव बढ़ रहा है।गंगालूर थाना क्षेत्र, जिसे कभी माओवादी कमांडर पापा राव का सुरक्षित इलाका माना जाता था, अब सुरक्षा बलों की घेराबंदी में है। डीआरजी, एसटीएफ, कोबरा और सीआरपीएफ की संयुक्त टीमों द्वारा लगातार किए जा रहे सर्च ऑपरेशनों ने माओवादियों की आवाजाही को चुनौतीपूर्ण बना दिया है।इस मुठभेड़ में 303 रायफल, बड़ी मात्रा में गोलाबारूद, विस्फोटक और माओवादी साहित्य बरामद हुआ है, जो इस बात की पुष्टि करता है कि नक्सली अभी भी बड़े हमलों की योजना बना रहे थे। किंतु सुरक्षा बलों की मुस्तैदी ने उनकी हर योजना को विफल कर दिया।

इतना ही नही,2026 के लक्ष्य का दबाव बढ़ रहा है अभियान की गति।सरकार का स्पष्ट लक्ष्य है।2026 तक नक्सल प्रभावित सभी कोर ज़ोन को पूरी तरह मुक्त करना। इसकी तैयारी पिछले कुछ वर्षों में व्यापक रूप से की गई है। सड़कें, दूरसंचार, कैंप, स्वास्थ्य सुविधाएँ, स्कूल और सुरक्षा पोस्ट इन सभी का विस्तार तेज किया गया है। जहाँ पहले सुरक्षा बलों को अंदर घुसने में जोखिम होता था, वहीं अब उनकी उपस्थिति स्थाई रूप से स्थापित हो रही है। यह विस्तार नक्सलियों की उस रणनीति को कमजोर कर रहा है, जिसमें वे ग्रामीण आबादी को काले कानूनों और दहशत के जरिए अपने प्रभाव में रखते थे। नक्सलियों का भीतरी ढांचा जानता है कि एक बार विकास की रोशनी किसी क्षेत्र में स्थाई रूप से पहुँच जाए, तो उनकी जनाधार पर आधारित रणनीति स्वतः ही ध्वस्त हो जाएगी। यही वजह है कि वे 2026 के लक्ष्य को लेकर भयभीत हैं और बचे-खुचे प्रभाव वाले इलाकों में हिंसा करके अपनी उपस्थिति साबित करने का प्रयास कर रहे हैं।मुख्यधारा से जुड़ने की इच्छा क्यों नहीं दिखा रहे नक्सली। एक बड़ा सवाल उठता है।जब अभियान इतना तेज है और सरकार सरेंडर नीति के तहत कई रियायतें देती है, तो नक्सली मुख्यधारा में क्यों नहीं आना चाहते? इसका उत्तर उनकी विचारधारा की कठोरता में छिपा है।नक्सलियों का शीर्ष नेतृत्व वर्षों से हिंसक संघर्ष को ही समाधान मानता रहा है। उनकी रचना और प्रशिक्षण का आधार यह मान्यता रही है कि सत्ता हथियारों से ही हासिल होगी। यही जिद उन्हें वास्तविक परिवर्तन और लोकतांत्रिक प्रक्रिया से दूर रखती है। इसके अलावा, उनका संगठनात्मक ढांचा बाहरी राज्यों से संचालित होता है, जहाँ ऊपरी नेतृत्व कभी मैदान में उतरता नहीं, लेकिन स्थानीय कैडर को मौत के मुंह में धकेलता रहता है। इस दोहरे मानदंड ने धीरे-धीरे युवा नक्सलियों के भीतर असंतोष को जन्म दिया है, मगर भय और दबाव उन्हें खुलकर सामने आने नहीं देता।सरेंडर करने वाले कई पूर्व नक्सलियों का कहना रहा है कि जंगल में रहकर वर्षों तक संघर्ष करने के बाद भी उनका जीवन बेहतर नहीं हो पाया, जबकि मुख्यधारा में आकर उन्हें न सिर्फ सुरक्षा मिली बल्कि सम्मानजनक आजीविका भी सुनिश्चित हुई। बार-बार की गोलीबारी और रुक-रुक कर जारी अभियान चिंताजनक है।पश्चिम बस्तर में पिछले कुछ हफ्तों से रुक-रुक कर गोलीबारी की घटनाएँ जारी हैं। सुरक्षा बलों का मानना है कि नक्सली अब छोटे-छोटे समूहों में बंटकर भाग रहे हैं। घने जंगलों और पहाड़ी इलाकों में वे घात लगाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन तकनीक और रणनीतिक बढ़त के सामने उनकी योजनाएँ लगातार असफल हो रही हैं। ड्रोन, थर्मल इमेजर, हाई-टेक जीपीएस सिस्टम और स्थानीय मुखबिर तंत्र के कारण अब उनका छिपना लगभग असंभव हो गया है। यही वजह है कि वे बड़े हमले करने की क्षमता खो चुके हैं और केवल पलायनवादी रणनीतियों का सहारा ले रहे हैं। नक्सलवाद का भविष्य क्या है। विशेषज्ञों की राय है कि 2026 का लक्ष्य अब वास्तविकता के करीब है। पिछले कुछ वर्षों में बीजापुर, सुकमा, दंतेवाड़ा, नारायणपुर और कांकेर जैसे जिलों में नक्सलियों के कई बड़े ठिकाने ध्वस्त हुए हैं। दर्जनों बड़े कमांडर मारे गए, सैकड़ों ने आत्मसमर्पण किया और हजारों की संख्या में समर्थक धीरे-धीरे मुख्यधारा का हिस्सा बने हैं।

विकास के बढ़ते दायरे, रोजगार योजनाओं, आधुनिक शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता ने ग्रामीण क्षेत्रों में वह भरोसा पैदा किया है, जो लंबे समय से नक्सलियों के दहशतवाद के कारण दबा हुआ था।आज गांवों में लोग मोबाइल नेटवर्क, सड़क, अस्पताल और स्कूल को अपनी जिंदगी में असली बदलाव लाने वाली चीज़ों के रूप में देख रहे हैं। यह परिवर्तन नक्सलियों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है, क्योंकि उनकी विचारधारा हिंसा और बाधा पर आधारित है, निर्माण और विकास पर नहीं।निर्णायक दौर में प्रवेश कर चुका है बस्तर। दंतेवाड़ा और बीजापुर में चली नवीनतम मुठभेड़ केवल एक सुरक्षा कार्रवाई नहीं, बल्कि नक्सलवाद के पतन की गूंज है। हिड़मा जैसे खूंखार कमांडरों का अंत इस संघर्ष में निर्णायक मोड़ का संकेत है। सरकार और सुरक्षा बलों की संयुक्त रणनीति ने नक्सली नेटवर्क के हर स्तर पर दबाव बढ़ा दिया है। मुख्यधारा में लौटने के अवसर खोलने के बावजूद नक्सलियों का जिद पर टिके रहना यह दर्शाता है कि संगठन के भीतर हार स्वीकारने की क्षमता नहीं बची। लेकिन बस्तर अब बदल रहा है। गांवों की सोच बदल रही है। विकास की रोशनी अंधेरे जंगलों को चीरकर आगे बढ़ रही है। 2026 का लक्ष्य अब केवल एक सरकारी घोषणा नहीं, बल्कि एक वास्तविकता की ओर बढ़ता कदम है।एक ऐसा कदम जो आने वाले समय में बस्तर, बीजापुर और दंतेवाड़ा को हिंसा की परछाई से मुक्त करके उन्हें नए युग की ओर ले जाएगा।

कांतिलाल मांडोत

मिट्टी में जहर से खाद्य सुरक्षा और स्वास्थ्य पर मंडराता संकट

मृदा प्रदूषण तब होता है जब मनुष्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हानिकारक रसायन, भारी धातुएँ या प्रदूषक पदार्थ मिट्टी में मिला देते हैं, जिससे न केवल मिट्टी की उर्वरता नष्ट होती है, बल्कि पूरा पारिस्थितिकी तंत्र और मानव स्वास्थ्य खतरे में पड़ जाता है। भारत में मृदा प्रदूषण अब एक गंभीर राष्ट्रीय संकट बन चुका है। मिट्टी की बिगड़ती सेहत चुपचाप कृषि उत्पादन को खोखला कर रही है। जलवायु परिवर्तन इस समस्या को और भयावह बना रहा है। भारत आज अनाज में आत्मनिर्भर है, लेकिन अगर मिट्टी की गुणवत्ता इसी तरह घटती रही तो आने वाले दशकों में हमें फिर से अनाज आयात करना पड़ सकता है। यदि अभी मिट्टी की सेहत सुधारने के ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो खाद्य सुरक्षा पर संकट के साथ-साथ लाखों किसानों की आजीविका भी दाँव पर लग जाएगी। मिट्टी की खराब गुणवत्ता का असर सिर्फ फसल पर नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, खाद्य सुरक्षा और सबसे बड़ी बात कि मानव स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। आज देश की अधिकांश कृषि योग्य भूमि किसी-न-किसी रूप में मृदा प्रदूषण की चपेट में है। और यह जहर अब हमारी थाली तक पहुँच चुका है। चावल में आर्सेनिक, गेहूँ में कैडमियम, सब्जियों में सीसा (लेड) और कीटनाशकों के अवशेष लगातार बढ़ रहे हैं। इन्हें खाकर लोग बीमार हो रहे हैं, बच्चे कुपोषित पैदा हो रहे हैं और कैंसर के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। मृदा प्रदूषण केवल पर्यावरण की समस्या नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य पर सीधा हमला है। अगर यही स्थिति रही तो एक दिन हमारी खेती की जमीन इतनी जहरीली हो जाएगी कि उसमें कुछ भी उगाना असंभव हो जाएगा। पंजाब का मालवा क्षेत्र (बठिंडा, फरीदकोट, संगरूर, मुक्तसर आदि) इसका जीता-जागता उदाहरण है। इसे 'भारत की कैंसर बेल्ट' कहा जाता है। यहाँ कैंसर के मामले राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक हैं। हर दूसरे-तीसरे घर में कोई न कोई कैंसर से जूझ रहा है। इसका मुख्य कारण जहरीली मिट्टी में उगा अनाज और सब्जियाँ हैं, जो रोज लोगों की थाली में परोसे जा रहे हैं। सरकार जैविक खाद को बढ़ावा दे रही है, लेकिन आज भी लाखों किसान अधिक पैदावार के लालच में यूरिया और खतरनाक कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं। लंबे समय तक इनका इस्तेमाल मिट्टी को बंजर बना रहा है। फैक्ट्रियाँ रात के अंधेरे में जहरीला पानी नदियों-नालों में छोड़ रही हैं, जो सीधे खेतों में पहुँच जाता है। शहरों में प्लास्टिक कचरा जलाने से निकलने वाला डाइऑक्सिन हवा के रास्ते मिट्टी में समा रहा है। सरकार ने 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना' शुरू की है, जिसका उद्देश्य हर खेत की मिट्टी की जाँच कर किसानों को उसकी सही स्थिति और सुधार के उपाय बताना है। लेकिन दुखद सच्चाई यह है कि आज भी अधिकांश किसान इस योजना से अनजान हैं या इसका लाभ नहीं ले पा रहे हैं। सस्ता यूरिया उपलब्ध होने के कारण वे पुरानी आदत नहीं छोड़ पा रहे। नतीजा यह है कि मिट्टी में जहर घुलता जा रहा है और किसान को पता तक नहीं। हवा, पानी और मिट्टी तीनों मिलकर पृथ्वी पर जीवन का आधार हैं।

मृदा प्रदूषण रोकने के लिए अब कड़े और त्वरित कदम उठाने होंगे:

- रासायनिक उर्वरकों की जगह जैविक खाद और जैविक खेती को बड़े पैमाने पर अपनाएँ।
- पेड़-पौधे लगाकर मिट्टी का कटाव रोका जाए साथ ही हर किसान अपनी मिट्टी का नियमित परीक्षण करवाए और उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करे।
- कचरे के सही निपटान और प्लास्टिक जलाने पर सख्ती हो।
- वर्षा जल संचयन और जल संरक्षण के उपाय अपनाए जाएँ।
- घरेलू जैविक कचरे से कम्पोस्ट बनाकर खाद के रूप में इस्तेमाल करें।
- सरकार की मृदा संरक्षण योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाएँ।
- सबसे जरूरी की जन-जागरूकता फैलाएँ और हर नागरिक को मिट्टी बचाने के लिए प्रेरित करें।

अगर हम आज मिट्टी को नहीं बचाएँगे, तो कल हमारी थाली में सिर्फ जहर ही होगा।

अम्बिका कुशवाहा 'अम्बी'

यूपी में अवैध घुसपैठ पर कड़ा प्रहार राज्य सरकार का व्यापक सत्यापन अभियान शुरू

उत्तर प्रदेश में रोहिंग्या और बांग्लादेशी घुसपैठियों की बढ़ती संख्या लंबे समय से आंतरिक सुरक्षा, कानून व्यवस्था और सामाजिक ताने-बाने के लिए चुनौती रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस गंभीर समस्या को देखते हुए राज्य के 17 प्रमुख नगर निकायों को तुरंत प्रभाव से व्यापक सत्यापन और सूचीकरण अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं। सरकार का मानना है कि अवैध रूप से भारत में घुसपैठ करने वाले लोगों की उपस्थिति न सिर्फ सुरक्षा जोखिम बढ़ाती है, बल्कि कई बार अपराध, जालसाजी, फर्जी पहचान और संसाधनों पर असमान दबाव जैसे खतरे भी उत्पन्न करती है। इसी वजह से प्रदेश स्तर पर चलाया जा रहा यह अभियान निर्णायक कदम माना जा रहा है।रोहिंग्या और बांग्लादेशी घुसपैठियां क्यों चिंता का विषय है?पिछले एक दशक में देश के कई राज्यों में अवैध प्रवासियों की संख्या तेज़ी से बढ़ी है। इनमें सबसे अधिक रोहिंग्या और बांग्लादेशी नागरिक शामिल हैं। कई बार ये लोग फर्जी कागज़ात के सहारे नागरिक सुविधाएं प्राप्त कर लेते हैं और संवेदनशील क्षेत्रों में आश्रय भी बना लेते हैं। सुरक्षा एजेंसियों ने पहले भी रिपोर्ट दी है कि विभिन्न मामलों में अवैध घुसपैठिए आपराधिक गतिविधियों, मानव तस्करी और फर्जी दस्तावेज़ बनवाने वाले नेटवर्क से जुड़े पाए गए हैं।यही कारण है कि उत्तर प्रदेश, खासकर पश्चिमी यूपी, काशी क्षेत्र और आगरा-मथुरा बेल्ट में उनका सत्यापन बेहद आवश्यक हो गया है। सरकार का निर्णय सुरक्षा सुदृढ़ीकरण के व्यापक उद्देश्य से जुड़ा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभी नगर आयुक्तों, डीएम, कमिश्नर और रेंज के आईजी को स्पष्ट आदेश दिया है कि अवैध रूप से रह रहे संदिग्ध व्यक्तियों की एक संगठित सूची तैयार की जाए और उसे तत्काल पुलिस तथा खुफिया एजेंसियों के साथ साझा किया जाए। यह सूची दो चरणों में तैयार की जानी है। प्राथमिक सत्यापन जहां व्यक्ति की पहचान, निवास स्थान और दस्तावेजों की प्रारंभिक जांच की जाएगी। गहन जांच एवं कार्रवाई होगी।इसमें पुलिस व खुफिया विभाग यह सुनिश्चित करेगा कि संबंधित व्यक्ति देश का वैध नागरिक नहीं है तो उसके विरुद्ध कानून के अनुसार कार्रवाई हो। सरकार के अनुसार इस अभियान का उद्देश्य न केवल घुसपैठ पर रोक लगाना है, बल्कि प्रदेश की आंतरिक सुरक्षा को नए स्तर पर मजबूत करना भी है।सफाईकर्मी के रूप में संदिग्ध पहचान एक महत्वपूर्ण कारण है।नगर निकायों के पास मौजूद रिकॉर्ड के अनुसार, बड़ी संख्या में सफाईकर्मियों की नियुक्ति पिछले वर्षों में ठेके के माध्यम से हुई है। कई बार ठेका एजेंसियां श्रमिकों के कागजात की गहराई से जांच नहीं करतीं, जिसके चलते कुछ संदिग्ध लोग भी सफाईकर्मी के रूप में नौकरी पा जाते हैं। क्योंकि सफाईकर्मी शहर के हर इलाके में आते-जाते हैं और कई महत्वपूर्ण स्थानों तक पहुंच रखते हैं, इसलिए सुरक्षा एजेंसियों ने इस श्रेणी पर विशेष ध्यान देने की जरूरत बताई है। आगरा में अभियान की शुरुआत 5000 सफाईकर्मियों का सत्यापन किया जा रहा है। आगरा नगर निगम ने इस सरकारी निर्देश पर सबसे तेज़ कार्रवाई करते हुए 5000 से अधिक सफाईकर्मियों की पहचान और सत्यापन प्रक्रिया शुरू कर दी है। प्रत्येक सफाईकर्मी का पूरा डेटा, फोटो सहित, पुलिस को सौंपा गया है। स्थानीय थानों में विशेष टीमें बनाई गई हैं जो 15 दिनों में सत्यापन प्रक्रिया पूरी करेंगी।जिन लोगों के दस्तावेजों में असंगतियां पाई जाएंगी, उनके खिलाफ तुरंत कानूनी कार्रवाई होगी।नगर निगम अधिकारियों के अनुसार, यह कदम न सिर्फ सुरक्षा के दृष्टिकोण से आवश्यक है, बल्कि शहर की प्रशासनिक पारदर्शिता को भी मजबूत करेगा।17 नगर निकायों में एक साथ अभियान का विस्तारकिया गया है।सरकार ने जिन 17 निकायों को निर्देश भेजे हैं, उनमें लखनऊ, कानपुर, वाराणसी, मेरठ, नोएडा, गाज़ियाबाद, आगरा, अलीगढ़, सहारनपुर समेत सभी बड़े शहर शामिल हैं। इन शहरों में प्रवासन दर अधिक है और कुछ स्थानों पर पहले भी संदिग्ध गतिविधियों की सूचना मिली है।उम्मीद है कि इन नगर निकायों में अगले दो सप्ताह में सभी सफाईकर्मियों, अस्थायी मजदूरों और किराएदारों की पहचान प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी।प्रक्रिया की पारदर्शिता और समयबद्धता पर विशेष जोरदिया गया है। मुख्यमंत्री ने यह स्पष्ट किया है कि यह अभियान किसी समुदाय विशेष के खिलाफ नहीं, बल्कि पूरी तरह सुरक्षा और कानून-व्यवस्था पर केंद्रित है। अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि प्रक्रिया के दौरान किसी भी व्यक्ति के साथ अनावश्यक दुर्व्यवहार न हो।सभी जांच निष्पक्ष और दस्तावेज़ आधारित हों। जहां भी संदेह हो, पुलिस व स्थानीय निकाय संयुक्त रूप से निर्णय लें।सरकार ने प्रत्येक निकाय को 15 दिन की समयसीमा दी है ताकि कार्रवाई तेज़ी से और प्रभावी तरीके से पूरी हो सके।अभियान के माध्यम से मिलने वाले व्यापक लाभ को गौण नही समझा जा सकता है। आंतरिक सुरक्षा मजबूत होगी अवैध घुसपैठ पर नियंत्रण के बाद संवेदनशील क्षेत्रों में संभावित आपराधिक गतिविधियों का खतरा कम होगा।नगर निकायों की कार्यप्रणाली पारदर्शी बनेगी। सभी कर्मचारियों का प्रामाणिक डेटा तैयार होने से भविष्य में फर्जी नियुक्तियों और अनियमितताओं पर लगाम लगेगी।कानून-व्यवस्था में सुधार जिन शहरों में अवैध प्रवासी अधिक संख्या में रहते हैं, वहां अपराधों में अचानक वृद्धि देखी जाती है। सत्यापन से यह प्रभाव कम होगा।राष्ट्रीय हित और सुरक्षा को बढ़ावा देना पहली प्राथमिकता है।यह कदम राष्ट्रीय सुरक्षा नीतियों के अनुरूप है, जहां देश की सीमाओं के भीतर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की पहचान स्पष्ट और प्रमाणित होनी चाहिए।स्थानीय समाज में विश्वास बढ़ेगा।नागरिकों को यह भरोसा मिलेगा कि सरकार उनके हितों और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है।चुनौतियां भी कम नहीं है।हालांकि सरकार के इस कदम की व्यापक सराहना हो रही है, लेकिन चुनौतीपूर्ण पहलू भी मौजूद हैं। कई अवैध घुसपैठिए फर्जी पहचान पत्र बना चुके हैं। कई लोग ठेका एजेंसियों के माध्यम से वर्षों से कार्यरत हैं, जिससे उनकी जांच और कठिन हो जाती है। सत्यापन के दौरान राजनीतिक और सामाजिक दबाव भी सामने आ सकते हैं। इन चुनौतियों के बावजूद सरकार का रुख साफ है।कानून व्यवस्था सर्वोपरि, सुरक्षा से कोई समझौता नहीं।उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संदिग्ध रोहिंग्या और बांग्लादेशी नागरिकों के खिलाफ शुरू किया गया यह तेज़ और व्यापक अभियान प्रदेश की आंतरिक सुरक्षा को एक नए स्तर पर मजबूत करने वाला कदम है। अवैध घुसपैठ लंबे समय से देश की एक गंभीर समस्या रही है, जिसका समाधान तभी संभव है जब राज्य स्तर पर ठोस और नियमित सत्यापन की व्यवस्था हो।सफाईकर्मियों से लेकर अन्य संवेदनशील क्षेत्रों में कार्यरत कर्मचारियों तक, हर व्यक्ति की पहचान सुनिश्चित करना न केवल कानून व्यवस्था की मजबूती के लिए आवश्यक है, बल्कि यह राष्ट्रीय हित में भी है। आगरा में 5000 सफाईकर्मियों का सत्यापन इसका प्रारंभिक नमूना है, और उम्मीद है कि आने वाले दिनों में पूरे प्रदेश में माहौल अधिक सुरक्षित, पारदर्शी और व्यवस्थित होगा। सरकार का यह कदम स्पष्ट संदेश देता है कि उत्तर प्रदेश में अवैध घुसपैठ अब बर्दाश्त नहीं की जाएगी और कानून का राज ही सर्वोच्च रहेगा।

कांतिलाल मांडोत

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोटः**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254,E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त खबरें

सत्संग मानसिक उन्नति का सोपान है : पं. झिलमिल जी महाराज

लालगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के ऐहार गांव स्थित सुप्रसिद्ध बाल्हेश्वर मंदिर के पास चल रही संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा के दूसरे दिन श्रद्धालुओं की भीड़ रही। कथा व्यास पं. झिलमिल महाराज ने दिति कश्यप प्रसंग और भगवान के बाराह अवतार की कथा सुनाई। उन्होंने बताया कि भगवान ने लोभ का नाश करने के लिए बाराह अवतार लिया। हिरण्याक्ष लोभ का प्रतीक है। लोभ मनुष्य का बड़ा शत्रु होता है। यही लोभ मनुष्य में पाप की जड़ बनता है। पं. झिलमिल महाराज ने कहा कि मन इंद्रियों का सबसे बड़ा संचालक है। मन भगवान की भक्ति में लग जाए तो मोक्ष मिलता है। यदि मन भोग में पड़ जाए तो पतन सुनिश्चित है। उन्होंने बताया कि गीता में भगवान कृष्ण भी अर्जुन से कहते हैं कि मन ही बंधन और मन ही मोक्ष का कारण है। उन्होंने कहा कि भागवत कथा और सत्संग से जीवन में शांति और आनंद मिलता है। इस मौके पर घनश्याम सोनी, शांति भूषण शुक्ला, सुमन मिश्रा, रिंकू तिवारी, संजू महाराज, विकास मिश्रा, टेनी महाराज, अर्जुन तिवारी, देशराज वर्मा, शिवबरन कुशवाहा और रविंद्र भारद्वाज सहित अनेक श्रोता मौजूद रहे।

कंपोजिट विद्यालय नेवादा देवमन में हुआ स्वास्थ्य परीक्षण कैम्प का आयोजन

किसी भी तरह की कोई दिक्कत हो तुंरत उपचार के लिए हॉस्पिटल आएं उचित इलाज किया जाएगा..डॉक्टर विजय सिंह

खैराबाद (सीतापुर) संकुल धरैंचा के कंपोजिट विद्यालय नेवादा देवमन में आज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र खैराबाद से बच्चों के स्वास्थ्य परीक्षण हेतु डॉक्टर विजय कुमार सिंह के नेतृत्व में चिकित्सा टीम द्वारा बच्चों का बड़ी बारीकी से परीक्षण किया गया इस अवसर पर प्राथमिक के 22 तथा पूर्व माध्यमिक विद्यालय के 60 बच्चों का परीक्षण किया गया, इस प्रकार कुल 82 बच्चों की जांच की गई जिसमें तीन बच्चों को रेफर किया गया टीम का कार्य बहुत अच्छा रहा बच्चों की नाप, वज़न,आंखों की जांच, दांतों की जांच तथा अन्य स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक जांच की गई अभिभावकों ने टीम के कार्य को काफी सराहा। प्रधानाध्यापक काज़िम हुसैन ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र में बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान अभिभावकों के द्वारा दिया नहीं जाता है जिसकी वजह से बच्चों में कोई न कोई बीमारी बनी रहती है इस लिए इनका नियमित परीक्षण होना चाहिए।स्वास्थ्य टीम में डॉक्टर विजय सिंह, डॉक्टर शिवानी टंडन, स्टाफ नर्स जया तिवारी तथा शिक्षक स्टाफ में शशी शुक्ला,आरफा खातून,हुदा अमरीन आदि उपस्थित थीं स्वास्थ्य टीम ने अभिभावकों को भरोसा दिलाया कि यदि कोई समस्या यानी बीमारी हो तो उसके लिए तुरन्त सरकारी अस्पताल आएं वहां उचित वा समुचित इलाज किया जाएगा, बिना योग्यता वाले फर्जी डॉक्टरों से इलाज न कराएं क्योंकि इनसे इलाज कराना एक नई बीमारी को निमंत्रण देना होगा।

दिल्ली रोड का होगा चौड़ीकरण, शासन ने दी स्वीकृति... टेंडर भी जारी

मेरठ। बेगमपुल से फुटबाल चौक तक अतिव्यस्त सड़क दिल्ली रोड के चौड़ीकरण को शासन ने स्वीकृति प्रदान कर दी है। लोक निर्माण विभाग ने सड़क के चौड़ीकरण व सुदृढ़ीकरण के लिए टेंडर जारी कर दिया है। इस कार्य योजना में बेगमपुल से फुटबाल चौक तक दिल्ली रोड की लंबाई 2650 मीटर लंबाई शामिल की गई है। इसकी लागत 11.51 करोड़ है। इस धनराशि में सड़क की वर्तमान चौड़ाई सात मीटर (एक तरफ) को बढ़ाकर 8 से 8.50 मीटर तक किया जाएगा। इसके साथ ही सड़क के दोनों तरफ नाले को कवर करते हुए इंटरलाकिंग टाइल्स भी लगाई जाएंगी। लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों का कहना है कि चयनित कंपनी के साथ अनुबंध तैयार कर शीघ्र निर्माण कार्य शुरू किया जाएगा।

फुटबाल चौक से बाईपास तक चौड़ीकरण को हरी झंडी

फुटबाल चौक से बाइपास तक बागपत रोड के चौड़ीकरण को शासन ने हरी झंडी दे दी है। दोनों तरफ एक से डेढ़ मीटर बढ़ाते हुए सड़क का चौड़ीकरण व सुदृढ़ीकरण किया जाएगा। इसमें सड़क की चौड़ाई 14 मीटर (दोनों तरफ) को बढ़ाकर 17 मीटर तक कर दिया जाएगा। इसमें शासन ने अनुमोदन प्राप्त होने के बाद अब टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। इस निर्माण कार्य की लागत 15.76 करोड़ है।

लोहे की रॉड से किया अधिवक्ता पर हमला, विपक्षी की तहरीर लिखने पर हुई मारपीट, चार भाईयों के खिलाफ केस दर्ज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर के मिश्रिख कोतवाली क्षेत्र में मंगलवार की देर रात अधिवक्ता पर हुए हमले से हड़कंप मच गया। आरोप है कि अधिवक्ता शुभम शर्मा पर क्षेत्र के ही कुछ दबंगों ने लाठी और लोहे की रॉड से जानलेवा हमला कर दिया हमले में अधिवक्ता गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्होंने संजय, राजू, दीपक और धर्मेंद्र पुत्रगण महेश पर हमले का आरोप लगाया है। घटना का एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर सामने आया है जिसमें अधिवक्ता पर किए गए हमले के दृश्य स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। अधिवक्ता शुभम शर्मा ने बुधवार को थाने में तहरीर देते हुए आरोप लगाया है कि विपक्षी पक्ष की तहरीर लिखने को लेकर विवाद हुआ था। इसी बात को लेकर आरोपितों ने पहले बहस की और बाद में उनपर हमला बोल दिया अचानक हुए हमले से इलाके में अफरा-तफरी का माहौल बन गया स्थानीय लोगों ने किसी तरह उन्हें बचाकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया, जहां प्राथमिक उपचार दिया गया। घटना की जानकारी मिलते ही क्षेत्र के अधिवक्ताओं में रोष फैल गया। वकीलों के एक प्रतिनिधिमंडल ने सीओ मिश्रिख से मुलाकात कर आरोपितों पर सख्त कार्रवाई की मांग की वकीलों ने कहा कि अधिवक्ता सुरक्षित नहीं रहेंगे तो आमजन की न्यायिक सहायता प्रभावित होगी। उन्होंने पुलिस से हमलावरों की तत्काल गिरफ्तारी और मुकदमे को गंभीर धाराओं में दर्ज करने की अपील की। सीओ मिश्रिख ने आश्वासन देते हुए कहा कि मामले में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जाएगी उनके निर्देश पर पुलिस ने चारों नामजद आरोपितों के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है पुलिस टीम आरोपितों की तलाश में लगातार दबिश दे रही है!!

फर्जी ऑनलाइन भुगतान का मैसेज दिखाकर धोखाधड़ी की कोशिश

● निशुल्क नेत्र एवं स्वास्थ्य जागरूकता शिविर सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे की मेन रोड स्थित पोस्ट ऑफिस के पास गुरुवार सुबह दुकानदारों ने एक युवक को संदिग्ध गतिविधियों के कारण पकड़ लिया। आरोप है कि वह दुकानदारों को ऑनलाइन पेमेंट का फर्जी मैसेज दिखाकर ठगने की कोशिश कर रहा था।जानकारी के अनुसार, युवक सद्दाम की दुकान पर स्मार्ट वॉच खरीदने पहुंचा।

खरीदारी के दौरान उसने 500 रुपये ऑनलाइन भुगतान करने का दावा करते हुए दुकानदार को अपने मोबाइल पर भुगतान सफल होने जैसा मैसेज दिखाया। हालांकि दुकान में लगे क्यूआर स्कैनर में भुगतान की पुष्टि करने वाली आवाज नहीं आई, जिससे दुकानदार को शक हुआ और उसने युवक को रोक लिया।शोर सुनकर आसपास के कई अन्य दुकानदार भी मौके पर पहुंच गए। कुछ दुकानदारों ने बताया कि युवक इससे पहले भी कई दुकानों पर इसी तरीके से फर्जी भुगतान दिखाकर धोखाधड़ी कर चुका है। एक दुकानदार का कहना है कि कुछ दिन पहले आरोपी ने उसके साथ 1800 रुपये की ठगी की थी और मौके से फरार हो गया था।

पुलिस अधीक्षक भदोही अभिमन्यु मांगलिक द्वारा थाना ऊंज के मिशन शक्ति केंद्र का किया गया निरीक्षण

भदोही आज दिनांक 04.12.2025 को अभिमन्यु मांगलिक, पुलिस अधीक्षक भदोही द्वारा थाना ऊंज के मिशन शक्ति केंद्र का निरीक्षण कर संबंधित रजिस्टरों को चेक किया गया। जिसमें महिला हेल्प डेस्क, महिला बीट अधिकारियों, महिला हेल्पलाइन नंबर (1090, 181, 112) की कार्यप्रणाली तथा आने वाली महिला शिकायतों के निस्तारण की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त की गई। इस दौरान पुलिस अधीक्षक महोदय ने संबंधित अधिकारियों/कर्मचारियों को निर्देशित किया कि मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं स्वावलम्बन से जुड़ी योजनाओं को और प्रभावी ढंग से संचालित किया जाए तथा प्रत्येक महिला फरियादी की शिकायत को संवेदनशीलता से लिया जाय और पीड़ित महिलाओं का 360 डिग्री काउंसिलिंग किया जाए एवं प्राथमिकता के आधार पर उनकी समस्याओं को निस्तारित किया जाए।

पाली हाउस सत्यापन, उच्च गुणवत्ता वाली सब्जी उत्पादन को मिलेगा बढ़ावा

रायबरेली। जिला उद्यान अधिकारी जयराम वर्मा ने बताया है कि एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना के अंतर्गत जिले के विकास खंड बछरावां स्थित ग्राम सुदौली में कृषक नृपेंद्र प्रताप राज सिंह के प्रक्षेत्र पर 2000 वर्गमीटर क्षेत्रफल में निर्मित पाली हाउस का सत्यापन उपनिदेशक उद्यान, लखनऊ मंडल की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा किया गया। पाली हाउस निर्माण पर कुल लागत 21.60 लाख व्यय की गई है, जिसमें योजना प्रावधान के अनुसार इकाई लागत का 50% अर्थात 10.80 लाख का अनुदान देय होगा। इस पाली हाउस में आधुनिक तकनीक के माध्यम से टमाटर की उच्च गुणवत्ता वाली खेती की जा रही है, जिससे उत्पादन वृद्धि के साथ ही किसानों की आय में भी उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी की संभावना है। सत्यापन के दौरान सहायक अभियंता लघु सिंचाई विभाग, प्रबंधक जिला अग्रणी बैंक, जिला उद्यान अधिकारी रायबरेली, प्रभारी विकासखंड, योजना प्रभारी एवं लाभार्थी कृषक नृपेंद्र प्रताप राज सिंह उपस्थित रहे। उद्यान विभाग द्वारा बताया गया कि आधुनिक तकनीक आधारित संरक्षित खेती से जनपद में बागवानी उत्पादों की गुणवत्ता एवं उत्पादकता में वृद्धि होगी, जिससे किसानों को बाजार में बेहतर मूल्य प्राप्त होगा तथा कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा।

मतदाता सूची पुनरीक्षण को लेकर कांग्रेस की बैठक, बीएलओ की लापरवाही पर नाराजगी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के नई बाजार मोहल्ला में बृहस्पतिवार को विशेष प्रगाढ़ मतदाता पुनरीक्षण कार्यक्रम को लेकर नगर कांग्रेस कमेटी की बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश के दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री व कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव सुरेंद्र शर्मा ने की।उन्होंने कहा कि मतदाता सूची सुधार अभियान में संगठन के सभी कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों को मिलकर लोगों के नाम जुड़वाने में मदद करनी चाहिए। गांव, मोहल्लों और वार्डों में समय पर कार्य पूरा करना बड़ी चुनौती है।श्री शर्मा ने बताया कि क्षेत्र भ्रमण के दौरान पता चला है कि कई बीएलओ न तो मतदाताओं को डबल फॉर्म दे रहे हैं और न ही पावती रसीद उपलब्ध करा रहे हैं, जिससे लोगों में असमंजस की स्थिति बनी हुई है। ऐसे में ऑनलाइन या मोबाइल से पंजीकरण करना भी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि बिना प्रशिक्षण पाए कर्मचारियों को जिम्मेदारी देना सरकार की लापरवाही दर्शाता है, जो चुनाव आयोग की कार्यशैली पर भी सवाल खड़ा करता है।बैठक में नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष प्रतीक शर्मा ने आभार व्यक्त किया, जबकि संचालन उपाध्यक्ष रोहित उर्फ लाला सोनी ने किया। जिला कोषाध्यक्ष दीपेंद्र गुप्ता, जिला उपाध्यक्ष महेश प्रसाद शर्मा, पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद मिश्रा सहित कई पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने अपने विचार रखे।

खाद गड्ढों पर अतिक्रमण की शिकायत दो महीने से लंबित, राजस्व विभाग मौन

● राजस्व विभाग की लापरवाही से ग्रामीण परेशान, किसान फॉर्मा और एसआईआर के नाम पर टालमटोल का आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। आदर्श ग्राम पंचायत ऐहार में खाद गड्ढों पर हो रहे अतिक्रमण को लेकर ग्रामीणों द्वारा दी गई शिकायत दो महीने से लंबित पड़ी है। 8 अक्टूबर को एसडीएम डलमऊ को लिखित रूप में आवेदन देकर ग्रामीणों ने खाद गड्ढों की पैमाइश कर अतिक्रमण हटाने की मांग की थी, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। ग्रामीणों का आरोप है कि हल्का लेखपाल और कानूनगो मामले को लेकर लगातार टालमटोल कर रहे हैं। कभी किसान फॉर्मा तो कभी एसआईआर की मांग कर प्रकरण को आगे नहीं बढ़ाया जा रहा है।इसी बीच गांव में अन्य स्थानों पर पैमाइश नियमित रूप से की गई, जिससे ग्रामीणों में और अधिक नाराजगी बढ़ गई है। ग्रामीणों का कहना है कि सार्वजनिक भूमि पर अतिक्रमण बढ़ता जा रहा है और प्रशासन द्वारा समय पर कार्रवाई न करने से विवाद गहराता जा रहा है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द पैमाइश कर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई शुरू नहीं की गई तो वे उच्चाधिकारियों से शिकायत के साथ आंदोलन का रास्ता अपनाने को मजबूर होंगे।

नारी जगत के सच्चे मसीहा: बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में भारत की आधी आबादी यानी नारी शक्ति को सदियों से जाति और पितृसत्ता की दोहरी गुलामी में रखा गया था। इस गुलामी की जंजीरें तोड़ने वाले महामानव कोई और नहीं, परम पूज्य बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर थे। वे नारी मुक्ति के सबसे बड़े योद्धा और सच्चे मसीहा हैं। जातिवादी और मनुवादी इतिहासकारों ने पहले बाबासाहेब को इतिहास से ही गायब करने की कोशिश की। जब मान्यवर कांशीराम साहेब और बहन मायावती जी के नेतृत्व में बहुजन समाज पार्टी ने बाबासाहेब को जन-जन तक पहुँचाया, तब इन लोगों ने नया षड्यंत्र रचा। अब वे बाबासाहेब को सिर्फ 'दलितों के मसीहा' बताकर उनका कद छोटा करने पर तुले हैं। लेकिन सच यह है कि बाबासाहेब सिर्फ दलितों के नहीं, समूची भारतीय नारी जाति के मुक्तिदाता हैं। आधुनिक भारत के राष्ट्रपिता हैं। बाबासाहेब ने नारी को कभी संकुचित दायरे में नहीं देखा। उन्होंने साफ कहा था, 'मैं समाज की उन्नति महिलाओं की उन्नति से मापता हूँ।' इसलिए उन्होंने हर क्षेत्र में नारी को बराबरी का हक दिलाने का काम किया। सबसे बड़ा काम किया हिंदू कोड बिल के जरिए। इसमें बेटियों को बेटों के बराबर पैतृक संपत्ति का अधिकार, तलाक का अधिकार, अंतरजातीय विवाह को मान्यता और बहुपत्नी प्रथा पर रोक जैसी क्रांतिकारी बातें थीं। उस समय के रूढ़िवादी लोग इतना डर गए कि नेहरू सरकार को भी पीछे हटना पड़ा और बाबासाहेब को मंत्री पद छोड़ना पड़ा। लेकिन बाबासाहेब नहीं रुके। बाद में यही हिंदू कोड बिल टुकड़ों में पास हुआ और आज हर बेटी को जो संपत्ति में हिस्सा मिलता है, उसकी नींव बाबासाहेब ने रखी। भारतीय संविधान में भी बाबासाहेब ने नारी को मजबूत अधिकार दिए। अनुच्छेद 14, 15, 16 के जरिए लैंगिक समानता की गारंटी दी।

महिलाओं-बच्चों के लिए विशेष कानून बनाने का अधिकार दिया। सबसे बड़ी बात-भारत में महिलाओं को इंग्लैंड और अमेरिका से पहले ही वोट का अधिकार मिला, यह बाबासाहेब की दूरदर्शिता थी। श्रमिक महिलाओं की रक्षा के लिए बाबासाहेब ने मातृत्व लाभ कानून, खदानों में महिलाओं की सुरक्षा और प्रसूति अवकाश की व्यवस्था करवाई। बाल विवाह, देवदासी प्रथा और विधवा उत्पीड़न जैसी कुरीतियों पर भी उन्होंने करारा प्रहार किया। बाबा साहेब ने बच्चियों की शिक्षा पर सबसे ज्यादा जोर दिया। उन्होंने कहा था- 'नारी को शिक्षित करो, ताकि वह गुलामी की मानसिकता से बाहर निकल सके।' सैकड़ों बहुजन-दलित बेटियों को उन्होंने छात्रवृत्ति और हॉस्टल दिलवाए। आज जब नारी सशक्तीकरण की बात होती है, तो कुछ लोग अपने नाम का डंका पीटते हैं, लेकिन असली हकदार बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर का नाम जान-बूझकर दबाया जाता है। याद रखिए-जिस दिन आपने वोट डाला, संपत्ति में हिस्सा लिया, नौकरी की, अपना जीवनसाथी चुना-उस हर खुशी के पीछे बाबा साहेब का हाथ है। बाबासाहेब न दलितों के अकेले मसीहा हैं, न सिर्फ बहुजनों के। वे भारत की हर बेटी, हर माँ, हर बहन के सच्चे मुक्तिदाता और नारी जगत के सबसे बड़े मसीहा हैं। भारत के राष्ट्र निर्माता हैं।

महिला ने तेजाब पीकर दी जान मासूम बच्चे के सिर से उठा मां का साया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर के कमलापुर थाना क्षेत्र के शिवपुरी गांव में गुरुवार को उस समय हड़कंप मच गया, जब घरेलू विवाद से क्षुब्ध एक महिला ने कथित तौर पर बैटरी में भरा तेजाब पीकर जान दे दी। परिजनों द्वारा आनन-फानन में अस्पताल ले जाए जाने के बावजूद महिला ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। विवाहिता की मौत के बाद मासूम बच्चे के सिर से मां का साया उठ गया है। जानकारी के मुताबिक, गांव निवासी 25 वर्षीय संगीता का विवाह करीब 5 वर्ष पूर्व विमलेश के साथ हुआ था बताया जाता है कि बुधवार देर रात पति-पत्नी के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई थी। परिजनों के अनुसार रात में विवाद बढ़ा, लेकिन मामला शांत हो गया। इसके बाद गुरुवार सुबह पति विमलेश खेत पर काम करने के लिए चला गया इसी दौरान संगीता ने घर में रखी बैटरी से तेज़ाब निकालकर पी लिया परिवार के सदस्यों को जब महिला की हालत बिगड़ती दिखाई दी तो उन्होंने तत्काल उसे नजदीकी अस्पताल पहुंचाया डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर हालत होने के चलते उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया, जहां इलाज के दौरान संगीता की मौत हो गई चिकित्सकों के मुताबिक तेज़ाब के सेवन से महिला के आंतरिक अंग बुरी तरह झुलस गए थे, जिससे उसकी जान नहीं बचाई जा सकी। घटना की जानकारी मिलते ही कमलापुर थाने की पुलिस टीम मौके पर पहुंची और आवश्यक पूछताछ की पुलिस ने परिजनों के बयान दर्ज करके मामले की जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी के अनुसार पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत के कारणों की आधिकारिक पुष्टि की जाएगी। फिलहाल प्रथम दृष्टया मामला घरेलू विवाद से उपजे तनाव में आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है!!

थाना श्रीदत्तगंज में क्षेत्राधिकारी उतरौला ने किया अर्धवार्षिक निरीक्षण, अभिलेख अद्यतन और अपराध नियंत्रण पर दिए कड़े निर्देश

बलरामपुर उतरौला। क्षेत्राधिकारी उतरौला राघवेन्द्र सिंह ने गुरुवार को थाना श्रीदत्तगंज का अर्धवार्षिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने मालखाना रजिस्टर, हवालात व्यवस्था, सीसीटीएनएस कार्यालय, मिशन शक्ति केंद्र, साइबर हेल्प डेस्क, आरक्षी बैरक तथा भोजनालय सहित सभी प्रमुख इकाइयों का विस्तृत निरीक्षण किया। सीओ ने अपराध, ग्राम अपराध, एचएस निगरानी, त्योहार एवं आगंतुक रजिस्टर सहित विभिन्न अभिलेखों की जांच कर उन्हें नियमित रूप से अद्यतन रखने के निर्देश दिए। थाना परिसर का निरीक्षण करते हुए उन्होंने साफ-सफाई और सुव्यवस्था पर विशेष ध्यान देने को कहा। उन्होंने पुलिसकर्मियों को ग्राम प्रहरियों के सहयोग से क्षेत्र के सक्रिय अपराधियों, संदिग्ध व्यक्तियों एवं छोटी से छोटी घटनाओं की लाभप्रद सूचनाएं एकत्र कर सतर्कता बनाए रखने के निर्देश दिए। साथ ही लंबित विवेचनाओं का समयबद्ध निस्तारण, वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी, रात्रि चेकिंग को प्रभावी बनाने तथा अपराधियों के भौतिक सत्यापन पर जोर दिया। सीओ ने अवैध शराब, मादक पदार्थों की तस्करी एवं महिला संबंधी अपराधों पर तुरंत और सख्त कार्रवाई के निर्देश भी जारी किए। निरीक्षण के दौरान थानाध्यक्ष अविरल शुक्ला सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

आज सीतापुर में ईपास मसीने जमा करके अपनी मांगों को लेकर कोटेदार करेंगे विशाल प्रदर्शन

● कोटेदारों की समस्याओं को लेकर आल इंडियन फेयर प्राइस शॉप डीलर एशोसिएशन के पदाधिकारियों के द्वारा ईपास मसीने जमा करके करेगे प्रदर्शन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। जनपद के सभी तहसीलों के कोटेदार 5 दिसम्बर को जिले के जिला पूर्ति अधिकारी कार्यलय पर अपनी ईपास मसीने जमा करके विशाल प्रदर्शन करगे।प्रदेश महासचिव अशोक कुमार सिंह ने प्रदेश कार्यलय वर्मी तहसील मिश्रिख जिला सीतापुर के द्वारा जानकारी देते हुए बताया गया कि समस्त प्रदेश पदाधिकारी,मंडल पदाधिकारी, अध्यक्ष प्रदेश एवम अध्यक्ष द्वारा और अन्य संगठनों से समन्वय बनाते हुए कार्य क्रम की रूपरेखा तैयार की गई है।सभी पदाधिकारी अपने जिला में पदाधिकारी और राशन विक्रेता बंधुओं के साथ 5 दिसंबर 2025 को प्रदेश के समस्त जिलों में मौजूद जिलापूर्ति अधिकारी, जिलाधिकारी या उनकी गैर मौजूदगी में जो भी अधिनिस्थ अधिकारी मौजूद हो उनको ज्ञापन के माध्यम से अपनी मांगे प्रेषित की जाएगी।संगठन की लड़ाई पूर्व की मांगो के सापेक्ष 200 रुपया प्रति कुंतल लाभांश या मिनिमम गारंटी आय 20000 रुपए गुजरात की तर्ज पर सरकार देना सुनिश्चित करे। अन्यथा धरना- प्रदर्शन और विधान सभा का घेराव सभी की उपस्थिति में किया जाएगा। खाद्य आयुक्त को सूचना ईमेल और डाक द्वारा रजिस्ट्री भेज कर की जा चुकी है ।उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री को चाहिए संगठन के प्रतिनिध मंडल को बुलाकर वार्ता करे और लाभांश एवं समस्याओं से अवगत होते हुए निर्णय लेने का कार्य करे अन्यथा सरकार के खिलाफ संघर्ष का विगुल बजा दिया जाएगा। कोटेदारों का यह अनवरत संघर्ष जारी रहेगा जब तक वार्ता नहीं होती कोटेदारों की लड़ाई जारी रहेगी।इसी क्रम में प्रदेश महासचिव अशोक कुमार सिंह, जिलाध्यक्ष सीतापुर रामलखन सिंह यादव, विजय पाल वर्मा संगठन मंत्री, विशाल रस्तोगी जिला महासचिव, कमलेश मिश्रा, राघवेंद्र सिंह, राकेश सिंह, आलोक मिश्रा, केशवराम, सुधीर मिश्रा, जय नारायण पांडेय, भानु सिंह, जय नारायण सिंह, नसीम, त्रिभुवन बर्मा, सुरेंद्र यादव, विजय वर्मा, अजय वर्मा, संतराम, हनुमान प्रसाद, कयूम खां, नंदलाल आदि कोटेदार बंधु उपस्थित रहेंगे।

नगर तंबौर में जलसा इस्लाहे मुआशरा का किया गया आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

तम्बौर सीतापुर/कस्बे में स्थित पानी की टँकी के नीचे बुधवार की रात जलसा इस्लाहे मुआशरा का आयोजन किया गया। इस मौके पर बाहर से आए उलेमा एकरामों ने मुसलमानों से अल्लाह और उसके रसूलों के बताए रास्ते पर चलने की अपील की। उलेमा एकरामों ने अपनी तकरीर में शिक्षा पर जोर दिया और समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने की बात कही। जलसा में मुख्य अतिथि के रूप में मेरठ से आए हजरत मौलाना मो0 खालिद साहब मौजूद थे। वही जलसे की सदारत हाफिज मो0 अतीक ने की, व जलसे की निजामत मुफ्ती मो0 रहिक हनफ़ी ने की। जलसे की शुरूआत कारी सुमामा इलाहाबादी ने तिलावत कुरआन पाक से किया। इसके बाद हाफिज अमीरुल हसन, कारी ज़ीशान जहांगीराबादी व तारीख जमील कन्नौजी ने हुजूर के सामने एक से बढ़कर एक नात पाक पेश किया। अपनी तकरीर में हजरत मौलाना खालिद साहब ने कहा कि समाज में कई कुरीतियां व्याप्त हैं। इसका प्रमुख कारण शिक्षा की कमी है। लोग दिनी दुनियावी तालीम हासिल करेंगे तो कुरीतियां खुद बा खुद दूर होंगी और समाज आगे बढ़ेगा। खालिद साहब ने कहा कि इस्लाम में दहेज लेना और देना हराम है। लोग इससे परहेज करें। मौलाना अखलाक ने कहा कि इस्लाम में हर मर्द औरत को इल्म सीखना फर्ज करार दिया गया है। लोग शिक्षा के मामले में जागरूक हों और बेहतर शिक्षा हासिल करें। मौलाना तौफीक साहब ने महिलाओं की शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि महिलाएं अच्छी से अच्छी तालीम हासिल करें। अगर महिलाएं शिक्षित होंगी तो हमारा समाज तेजी से आगे बढ़ेगा। इस अवसर पर अबुल खैर नदवी, कारी परवेज़, कारी तनवीर, मौलाना अबुल हसन, मौलाना मो0 अनस, मौलाना नूर आलम, कारी बिलाल, कारी अब्दुल हलीम, कारी लुकमान कमर, कारी सहाबुद्दीन, मौलाना ताहिर, ने भी अपने कलाम पेस किए वही इस जलसे को कामयाब बनाने में हाफिज हस्सान असरफ, हाफिज मो0 गुफरान नूरी, हाफिज मो0 कैफ नूरी, हाफिज खुर्शीद आलम, कारी शाबान फुरकानी, मो0 कामिल, हाफिज मो0 शादाब, मो0 शाबान मंसूरी, मो0 तुफैल गौरी, मो0 अदनान ने कड़ी मेहनत की जिससे जलसा कामयाब हो सका।

SIR को लेकर सपा ने बूथ प्रहरी उतारे जिलाध्यक्ष ने दिया जीत का मंत्र, बोले- लड़ाई उनसे जो है जो बहुत ही चालाक हैं

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर में समाजवादी पार्टी द्वारा बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत करने के उद्देश्य से गुरुवार को पीडीए प्रहरियों को शपथ दिलाई गई कार्यक्रम में सपा छात्र सभा के जिला अध्यक्ष शिवम सिंह ने प्रहरियों को बूथ पर सक्रिय रहने, मतदाताओं को जागरूक करने और चुनाव के दौरान कथित षड्यंत्रों को विफल करने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि राजनीतिक मुकाबले में जिनसे लड़ाई है, वे 'चालाक और होशियार' लोग हैं, इसलिए कार्यकर्ताओं को सतर्क रहकर अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी इस दौरान पीडीए प्रहरियों को बूथ प्रबंधन, मतदाता संपर्क तथा सूचना तंत्र को मजबूत करने के निर्देश दिए गए। पार्टी पदाधिकारियों ने कहा कि हर बूथ पर नियुक्त प्रहरी मतदाता सूची, बूथ संरचना और अपने क्षेत्र की समस्याओं पर लगातार नजर रखें। इसके साथ ही युवाओं को संगठन से जोड़ने और घर-घर संपर्क अभियान को गति देने पर भी जोर दिया गया कार्यक्रम में छात्र सभा के कार्यकर्ताओं ने लोगों से स्ट्रक्रफॉर्म भरने की अपील की। जिलाध्यक्ष शिवम सिंह ने कहा कि स्ट्रक्रफॉर्म के माध्यम से संगठन लोगों की समस्याओं, शिकायतों और सुझावों को सीधे पार्टी तक पहुंचा पाएगा, जिससे बूथ स्तर पर मजबूत नेटवर्क तैयार होगा उन्होंने प्रहरियों से कहा कि वे गांव-गांव और मोहल्लों में जाकर लोगों को फॉर्म भरने के लिए प्रेरित करें और जागरूकता अभियान को तेज करें। सपा नेताओं का कहना है कि बूथ स्तर पर संगठन को सशक्त बनाना आगामी चुनावों की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है पीडीए प्रहरियों की तैनाती का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक बूथ पर पार्टी की मजबूत उपस्थिति रहे और किसी भी प्रकार की गड़बड़ी की संभावना को समय रहते रोका जा सके। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र सभा कार्यकर्ता और स्थानीय पदाधिकारी मौजूद रहे। सभी ने मिलकर बूथ सशक्तिकरण मिशन को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया!!

संक्षिप्त खबरें

उप कृषि निदेशक द्वारा स्थानीय कृषि उत्पादन मंडी समिति का औचक निरीक्षण

हमीरपुर:- कुरारा कस्बा की स्थानीय कृषि उत्पादन मंडी समिति में संचालित ज्वार खरीद केंद्र का औचक

निरीक्षण उप कृषि निदेशक द्वारा किया गया। तथा किसानों की समस्या का समाधान कराए जाने का आश्वासन दिया। कृषि उत्पादन मंडी समिति में ज्वार खरीद केंद्र दो सप्ताह से बंद है। तथा ज्वार की तौल नहीं हो पा रही है। बचरौली गांव निवासी समाजसेवी व किसान गणेश तिवारी ने शिक़ायत की।

कि ज्वार की तौल न होने से क्षेत्र का किसान परेशान है। तथा दो सप्ताह से केंद्र में तौल बंद है। प्रद्युम्न सिंह ने ज्वार की तौल न हो पाने की शिक़ायत की। उप कृषि निदेशक डॉ प्रमोद कुमार गुप्ता ने किसानों की समस्या सुनकर अधिकारियों को अवगत कराए जाने की बात कही। केंद्र प्रभारी अपर्णा अवस्थी का स्थानांतरण हो जाने से तौल का कार्य प्रभावित हो रहा है। किसानो ने जल्द प्रभारी की तैनाती किए जाने की मांग की जिससे ज्वार की तौल शुरू हो सके।

हमीरपुर डिपो की 'जनता सेवा' बसों का संचालन अनियमित, मुसाफिर परेशान

हमीरपुर- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा यात्रियों को सुलभ और किफायती परिवहन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू की गई 'जनता सेवा' बसें हमीरपुर डिपो में अव्यवस्था का शिकार हो गई हैं। इन बसों का किराया सामान्य किराए से 20 प्रतिशत कम रखा गया है, जिससे आम जनता को राहत मिलनी चाहिए थी, लेकिन निर्धारित समय पर बसें न मिलने से यात्रियों को उल्टा परेशानी उठानी पड़ रही है।

क्षेत्र के ग्रामीणों का कहना है कि हमीरपुर डिपो से चलने वाली जनता सेवा बसों का समय तय नहीं है। कई बार बसें घंटों देरी से आती हैं, जिससे छात्र, नौकरी पेशा लोग और मजदूरों को अपने गंतव्य तक पहुंचने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण रामबाबू प्रजापति, रामनरेश साहू, जग भान यादव, अनिल सिंह, भरोसी प्रजापति और किशोरी प्रजापति सहित अन्य लोगों ने बताया कि अनियमितता के कारण उन्हें निजी वाहनों का महंगा किराया देना पड़ जाता है। इसके चलते सरकार की यह योजना अपने उद्देश्य से भटकती नजर आ रही है। जब इस मामले में बस परिचालक कुमारी मेघा देवी से जानकारी ली गई तो उन्होंने स्पष्ट किया कि देरी की मुख्य वजह उन्हें समय पर बस उपलब्ध न कराया जाना है। उनका कहना है कि डिपो से समय नियत होने के बावजूद वाहन उपलब्धता में कमी के कारण बसों को निर्धारित समय पर रवाना नहीं किया जा सकता। इस संबंध में हमीरपुर डिपो के वरिष्ठ केंद्र प्रभारी विनोद कुमार मिश्रा और समय व्यवस्थापक मनीष कुमार वर्मा से संपर्क किया गया। उन्होंने बताया कि एक वाहन के चालक के उपलब्ध न होने से संचालन प्रभावित हो रहा है। अधिकारियों ने भरोसा दिलाया कि चालक की तैनाती होते ही जनता सेवा बसों का संचालन नियमित कर दिया जाएगा।

पैकेज डिलीवरी स्क्रैच.. फिर एड्रेस अपडेट करने के लिए आया लिंक और खाते से 1.48 लाख रुपये गायब

मेरठ। साइबर अपराधियों ने एक युवती के वाट्सएप पर पता अपडेट कराने का लिंक भेजकर खाते से 1.48 लाख रुपये निकाल लिए। नौचंदी थाना क्षेत्र के कुंज विहार निवासी उत्कर्ष खन्ना ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि आठ नवंबर को उसकी बहन कोमल ने आनलाइन शैंपू का आर्डर किया था। 26 नवंबर को बहन के मोबाइल पर पैकेज डिलीवरी फेल होने का एसएमएस आया। साथ में ही पता अपडेट का लिंक भी दिया हुआ था। लिंक पर क्लिक करते हुए कोमल के बैंक खाते से दो बार में 1.48 लाख रुपये निकल गए। पीड़िता ने इसकी शिकायत तत्काल साइबर हेल्प लाइन नंबर 1930 पर की। थाना प्रभारी इलम सिंह पंवार का कहना है कि मुकदमा दर्ज कर लिया है। साइबर सेल की टीम जांच कर रही है।

जिले में धान खरीदी केन्द्र में सी.सी. कैमरा एवं जिला स्तरीय जॉच कमेटी तैनात की मांग

● सोसायटी एवं समूह के माध्यम से आवंटित दुकानों की निगरानी जिला स्तर से हो- तिवारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

शहडोल जैसे ही जिले में धान खरीदी का समय आता है, एन.जियो के माध्यम से वैध व अवैध समूह के साथ सोसायटी में लंबी आस बैठे कर्मचारियें के पौ बारा नजर आते हैं, इसकी गोपनीय जानकारी सहकारिता के साथ जिला खाद्य एवं कंटोलर अधिकारी के पास रहती है। ये अधिकारी अपने चहेतो एवं सुविधा शुल्क का बजन देखकर धान खरीदी केन्द्र आवंटित किए जाते हैं, यह जानकारी किसान नेता जनता दल यू किसान सभा के प्रदेश पूर्व भाजस अध्यक्ष विधायक दल नेता निजी सचिव ने दी है।

तिवारी ने यह भी बताया कि शहडोल जिले धान खरीदी केन्द्रो को आवंटित आदेश होते ही गड़बड़ी को लेकर प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं जिला प्रभारी मंत्री तक केन्द्रवार जानकारी देकर शीघ्र कार्यवाही की मांग की गई एवं संभागीय कमिश्नर एवं जिला कलेक्टर से संज्ञान में लेकर शीघ्र जिले के धान खरीदी केन्द्रो में सी.सी. कैमरा लगाकर उसका कंट्रोल जिला मुख्यालय के साथ सर्वजनिक हो साथ ही हरदिन धान खरीदी केन्द्रो में वरिष्ठ सक्षम अधिकारी द्वारा औचक निरीक्षण कराने की भी मांग की गई है, क्योकि पिछले सत्र में भी धान खरीदी में करोड़ों रू. की हेरा फेरी उजागर हुई थी, जिसकी भरपाई अभी तक नही हो सकी, बेगुनाह किसान आज भी परेशान है धान खरीदी में लिप्त लोगों द्वारा भारी रकम की हेरा फेरी हुई हाल ही में जो धान खरीदी केन्द्र बनाए गए हैं, शीघ्र जॉच करायी जाए की कहीं पूर्व में धान खरीदी में लिप्त भ्रष्टाचारी लोगों का सरंक्षण व अभयदान तो नही।

मनरेगा मजदूरों ने जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंप कर मजदूरी दिलाए जाने की मांग की

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर:- कुरारा क्षेत्र के ग्राम पंचायत चकोठी के मनरेगा मजदूरों ने जिलाधिकारी को एक प्रार्थना पत्र देकर वर्ष 2021 से 2025 के बीच किए गए विभिन्न कार्यों की मजदूरी दिलाए जाने की मांग की है। मजदूरों का कहना है कि नरेगा, मॉडल तालाब, नाली निर्माण तथा अन्य कार्यों का भुगतान अब तक नहीं हुआ है, जिससे उन्हें आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। मजदूरों द्वारा दिए गए विवरण के अनुसार, मॉडल तालाब में पक्का व कच्चा काम, ईट ढुलाई, नहर से चकरोड तक कार्य, मेड़ बंधाई, झाड़ी कटाई व साफ-सफाई सहित कई गतिविधियों में अलग-अलग मजदूरों ने श्रम किया था। उनका कहना है कि इन कार्यों की मजदूरी कई वर्षों से लंबित है।

प्रार्थना पत्र में यह भी उल्लेख किया गया है कि भुगतान को लेकर उन्होंने ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों से कई बार संपर्क किया, लेकिन समाधान नहीं हो सका। मजदूरों का कहना है कि उन्होंने पूर्व में भी उच्चाधिकारियों को ज्ञापन दिए थे, परंतु अब तक उन्हें कोई स्पष्ट जानकारी नहीं मिली है। मजदूरों ने जिलाधिकारी से आग्रह किया है कि उनके बकाया भुगतान की जांच कर उचित कार्रवाई कराई जाए। इस संबंध में सचिव ओमप्रकाश प्रजापति का कहना है कि प्रार्थना पत्र में दर्ज मुद्दे कई वर्ष पुराने हैं, जबकि उनकी नियुक्ति दो माह पूर्व ही हुई है। उन्होंने बताया कि मामले की तथ्यों के आधार पर जांच कराई जाएगी। ग्राम प्रधान हरिशंकर ने कहा कि यदि मजदूरों के पास कोई कार्य संबंधी तथ्य या दस्तावेज हैं, तो वे ब्लॉक कार्यालय में आकर बैठकर चर्चा कर सकते हैं, जिससे स्थिति स्पष्ट हो सके।

मौदहा में सड़क हादसा: तिलक समारोह से लौट रहे युवक की मौत, दो घायल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर- मौदहा कोतवाली क्षेत्र में मंगलवार रात एक दर्दनाक सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा उस समय हुआ जब तिलक समारोह से लौट रहे तीन बाइक सवारों को अचानक सड़क पर आई नीलगाय ने टक्कर मार दी। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार, मौदहा कस्बे के इलाही तालाब निवासी 27 वर्षीय ओमबाबू, 27 वर्षीय अंकित सोनी और गहबरा निवासी 25 वर्षीय संदीप तिलक समारोह में शामिल होकर अंकित की बुलेट मोटरसाइकिल से लौट रहे थे। नेशनल हाईवे 34 और गहबरा मार्ग के बीच नीलगाय अचानक सड़क पर आ गई और उनकी बाइक से सीधे टकरा गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि तीनों युवक सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए।

घायलों को तत्काल मौदहा के सरकारी अस्पताल ले जाया गया। हालत गंभीर होने पर अंकित सोनी को मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया, लेकिन रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। ओमबाबू और संदीप का उपचार अस्पताल में जारी है। मृतक अंकित सोनी मूलरूप से ग्राम अरतरा का निवासी था। वह मौदहा कस्बे के इलाही तालाब के पास मकान बनाकर रह रहा था और कस्बे में एक ज्वेलरी की दुकान चलाता था। तीन भाइयों में दूसरे नंबर के अंकित की अभी शादी नहीं हुई थी। उसकी अचानक मौत से परिवार और क्षेत्र में शोक व्याप्त है।

हाईवे पर बेकाबू ई-रिक्शा: चार सीटर में भरी 18 सवारियां, छह बच्चे लटके मिले

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर- जनपद में ई-रिक्शा चालकों द्वारा यातायात नियमों की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही हैं।मौत को दावत देने वाला ताज़ा मामला मौदहा क्षेत्र से सामने आया है, जहां एक चार सीटर ई-रिक्शे में 18 लोगों को बैठाकर तेज रफ्तार में हाईवे पर दौड़ाया जा रहा था। इस खतरनाक नज़ारे का वीडियो एक कार सवार राहगीर द्वारा बनाए जाने के बाद सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया। वीडियो की जांच में पता चला कि यह घटना बीती रात मौदहा से कमहारिया जाने वाले स्टेट हाईवे पर सामने आई थी। बताया जा रहा है कि ई-रिक्शे को मौदहा से कमरहिया के लिए बुक किया गया था। इसमें पुरुष, महिलाएं और बच्चे मिलाकर कुल 18 सवारियां सवार थीं। चौंकाने वाली बात यह रही कि इनमें से छह बच्चे रिक्शे के पिछले हिस्से पर बाहर लटके हुए थे, जिससे कभी भी बड़ा हादसा हो सकता था।

राहगीर ने जब ओवरलोडेड ई-रिक्शे को रुकवाकर चालक से पूछताछ की, तो चालक ने स्वयं स्वीकार किया कि वाहन में 18 लोग सवार थे। यह स्थिति न केवल सवारियों की जान खतरे में डालती है, बल्कि यातायात नियमों का गंभीर उल्लंघन भी है। विशेष रूप से ध्यान देने वाली बात यह है कि मौदहा से कमहारिया जाने वाले मार्ग पर बड़े चौराहे के पास पुलिस पिकेट और ट्रैफिक पुलिस की ड्यूटी रहती है। बावजूद इसके, एक चार सीटर वाहन में इतनी अधिक सवारियां भरकर हाईवे पर दौड़ाया जाना सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े करता है। स्थानीय लोगों ने मांग की है कि पुलिस ऐसे वाहनों पर सख्त कार्रवाई करे, ताकि भविष्य में इस तरह की लापरवाही से किसी बड़ी दुर्घटना को रोका जा सके।

हापुड़ रोड को दिल्ली रोड से जोड़ने वाले बाईपास की तरफ चले गए तो हो जाएंगे परेशान, रेंगकर चल रहे वाहन

मेरठ। हापुड़ रोड को दिल्ली रोड से जोड़ने वाला बिजलीबंबा बाईपास अब जाम रोड के रूप में तब्दील हो गया है। इस मार्ग पर जाम केकारण प्रतिदिन वाहन रेंगकर चल रहे है। मार्ग के दोनों तरफ पुलिस चौकी होने के बावजूद जाम से निजात नहीं मिल पा रही है। जाम में फंसे वाहन चालक आपस में नोंकझोक करते नजर आते है। बुधवार को भी इस मार्ग पर जुर्रानपुर फाटक के दोनों ओर वाहनों की कतार लगी रही। साढ़े सात किमी के इस मार्ग पर तीन थानों की सीमा लगती है। इसके अलावा शाप्रिक्स माल, जुर्रानपुर फाटक व हापुड़ रोड पर यातायात पुलिस तैनात रहती है। फिर भी इस मार्ग पर प्रतिदिन जाम लगा रहता है। शाम के समय तो इस मार्ग पर कई किमी लंबा जाम लग जाता है। यातायात व्यवस्था बनाने में ट्रैफिक पुलिस ही जूझती नजर आती है। तीनों थानों की पुलिस नदारद रहती है।

स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज का दिव्य चित्र प्रदर्शित

131वें जन्मोत्सव पर पुष्पांजलि एवं श्रद्धांजलि सभा का भव्य आयोजन

हमीरपुर: राठ कस्बा में परम पूज्य स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज के 131वें जन्मोत्सव के अवसर पर गुरुवार दोपहर 12 बजे उनकी समाधि पर भव्य पुष्पांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि जितेंद्र सिंह सेंगर, प्रबंध समिति अध्यक्ष डॉ. इंद्रपाल सिंह, महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. सुरेंद्र सिंह सहित नगर के अनेक गणमान्यजनों ने स्वामी जी की समाधि पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। इसके पश्चात महाविद्यालय के दंगल प्रांगण में श्रद्धांजलि सभा संपन्न हुई। मुख्य अतिथि द्वारा स्वामी ब्रह्मानंद जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। अतिथियों का माल्यार्पण एवं अंगवस्त्र भेंट कर सम्मान किया गया। प्राचार्य प्रो. सुरेंद्र सिंह ने स्वामी जी के तप, त्याग और शिक्षा सेवा से भरे जीवन पर प्रकाश डाला। अपने संबोधन में डॉ. उमाकांत सिंह ने महाविद्यालय को विश्वविद्यालय का दर्जा दिए जाने की माँग सरकार से की। पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण दादा ने युवा पीढ़ी से नशे से दूर रहने की अपील की। पूर्व सचिव, भारत सरकार डॉ. बी.के. लोधी ने कहा कि किसी देश को कमजोर करना हो तो उसके युवाओं को नशे की लत लगा दो—आज वही समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनती जा रही है। पूर्व मंत्री चौधरी राजेंद्र सिंह ने भी अपने विचार साझा किए। प्रबंध समिति अध्यक्ष डॉ. इंद्रपाल सिंह ने स्वामी जी के जीवन-वृत, उनके आदर्शों और शिक्षा क्षेत्र के प्रति समर्पण का उल्लेख करते हुए कहा कि महाविद्यालय परिवार इसे विश्वविद्यालय बनाने के लिए संकल्पित है। डॉ. कमलेश सक्सेना, सचिव प्रबंध समिति ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया और स्वामी जी से जुड़ी स्मृतियाँ सांझा कीं। डॉ. एस.पी. सिंह ने स्वामी जी के साथ बिताए अपने अनुभव बताते हुए कहा कि हमें शिक्षा और स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए तथा किसानों को यूरिया का कम उपयोग करने की सलाह दी। कार्यक्रम में विधायक मनीषा अनुरागी ने स्वामी जी के तपस्वी जीवन से प्रेरणा लेने

और उनके दिखाए मार्ग पर चलने का संदेश दिया एवं महाविद्यालय को पूर्ण समर्थन देने का आश्वासन दिया। जिला पंचायत अध्यक्ष जयंती राजपूत ने स्वामी जी को अपना जीवन-आदर्श बताया। अंत में मुख्य अतिथि ने कहा कि स्वामी ब्रह्मानंद जी तप, त्याग और शिक्षा के प्रकाश स्तंभ हैं। उन्होंने क्षेत्र में शिक्षा की ज्योति जगाकर समाज को नई दिशा दी। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष डॉ. अजयपाल सिंह, चंद्रशेखर मिश्रा, लक्ष्मण लाल त्रिपाठी, प्राध्यापक डॉ. एस.जी. राजपूत, डॉ. शैलेंद्र सिंह, ए.एन. शुक्ला, डॉ. आर.बी. शर्मा, तथा धर्मेंद्र सिंह, राजकुमार, राजेश चौरसिया सहित कई सम्मानित नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सरजू नारायण ने किया।

प्रेमिका पर कर दी थी टिप्पणी... प्रेमी को नागवार गुजार और युवक को ईटों से कुचलकर मार डाला

मेरठ। परतापुर में युवक की हत्या मामले का पुलिस ने राजफाश कर दिया है। प्रेमिका पर टिप्पणी करने की वजह से युवक की हत्या की गई है। पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। परतापुर थाना क्षेत्र के मोहकमपुर रेलवे ट्रैक के पास 27 नवंबर को एक युवक का शव मिलने के बाद सनसनी फैल गई थी। चेहरे पर ताबड़तोड़ वार कर युवक को मौत के घाट उतारा गया था। युवक की पहचान राजू पुत्र मांगेराम निवासी खजूर वाला मोहल्ला मलियाना थाना टीपी नगर के रूप में हुई। भाई पप्पू की तरफ से परतापुर थाने में हत्या का मुकदमा दर्ज कराया गया। राजू का मोबाइल फोन घटना स्थल से नहीं मिला है। पुलिस ने उसके मोबाइल की तलाश की और राजू के नंबर की सीडीआर निकलवाई। एक नंबर ऐसा था जिस पर कई बार बात की गई थी। वही नंबर हनी उर्फ विनीत आनंद का था, जो टीपी नगर के शिवपुरम में रह रहा था। पुलिस ने हनी को गिरफ्तार कर लिया। हनी ने बताया की प्रेमिका पर युवक ने टिप्पणी कर दी थी, इसीलिए ईटों से कुचलकर उसकी हत्या कर दी गई। पुलिस ने हनी को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया, जहां से रिमांड बनाकर आरोपित को जेल भेज दिया गया।

'डेमो ट्रेन' शुरू करने की मांग को लेकर विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के हस्ताक्षरित रेलवे विभाग के जीएम के पास स्मारक पत्र प्रस्तुत किया

● एक स्मारक पत्र डाक के माध्यम से मालिगांव रेलवे विभाग के जीएम के पास स्मारक पत्र प्रस्तुत किया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि: वर्तमान सरकार 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के नारे के माध्यम से हर विधानसभा समेत राज्य के संपर्क में ट्रेनों की सेवाओं पर महत्व देने के चलते यात्री कम खर्च में यात्रा कर पा रहे हैं। रेलवे विभाग की प्रगति के कारण शिलचर-दुल्लभछड़ा मार्ग पर 'डेमो ट्रेन' सेवा शुरू करने के लिए श्रीभूमि जिले के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के हस्ताक्षरित एक स्मारक पत्र डाक के माध्यम से गत 30 नवंबर को मालिगांव रेलवे विभाग के जीएम के पास भेजा गया। इसमें उल्लेख किया गया है कि संचार के मामले में वर्तमान में 'डेमो ट्रेन' रेलवे सेवा की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि स्थानीय व्यापारी अपने उत्पादित माल को

जिले के विभिन्न क्षेत्रों में बहुत कम खर्च में आयात या निर्यात कर सकेंगे और सरकार को कर की वृद्धि होगी।

अलग से, अन्य स्मारक पत्र में यात्रियों की सुविधा के लिए जिले के दुल्लभछड़ा, फाकुवा, एरालीगुल रेलवे स्टेशन पर डिजिटल माध्यम से अपग्रेडेशन, अत्याधुनिक विद्युत सेवा, पीने के पानी और विश्राम गृह शौचालय जैसी सुविधाओं की मांग की गई है। ताकि यात्रियों को किसी भी प्रकार की सरकारी सुविधा से वंचित न होना पड़े, सरकार जन-कल्याण में सहयोग देती रहे।

होटल विलासा इंटरनेशनल बुढ़ार होटल विलासा इंटरनेशनल के स्वर्णिम 7 वर्ष: परंपरा, सेवा और भव्यता के सफ़र का साक्षी पूरा कोयलांचल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता
दिनेश चौधरी

बुढ़ार, शहडोल संभाग के इकलौते आलीशान, आधुनिक सुविधाओं से युक्त और सेवा-भाव को अपना ध्येय मानने वाले होटल विलासा इंटरनेशनल ने अपने 7 गौरवशाली वर्ष पूरे कर लिए हैं। इस विशेष अवसर पर होटल परिसर में सादगीपूर्ण किंतु गरिमामय कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। कार्यक्रमों की शुरुआत होटल के संस्थापक, दूरदर्शी व्यक्तित्व के धनी स्वर्गीय श्री पवन चमड़िया जी की छायाचित्र पर माल्यार्पण कर उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ हुई। इस अवसर पर परिवार के सभी सदस्य उपस्थित रहे जिनमे श्रीमति आशा बाई चमड़िया, मनीष चमड़िया, बनवारीलाल चमड़िया, मृनलिनी चमड़िया, नरेश खेमका व परिवार क़े अन्य सदस्यों ने उन्हें स्मरण करते हुए उनके जीवन मूल्यों और तपस्वी परिश्रम का उल्लेख किया, जिसके परिणामस्वरूप यह होटल आज सम्मान, आदर और आतिथ्य का प्रतीक बन चुका है।

स्वर्गीय पवन चमड़िया जी ने 'अतिथि देवो भव' की भारतीय परंपरा को अपने कर्म से संवारा और इसी सोच से होटल विलासा इंटरनेशनल की नींव रखी गई थी। आज यह होटल न केवल बुढ़ार, अपितु समूचे कोयलांचल क्षेत्र में अपनी भव्यता, अनुकरणीय सेवा और अतिथियों के प्रति सम्मान की भावना के कारण एक अलग पहचान बनाए हुए है। मिलनसार स्टाफ, स्वच्छता, अनुशासन और दक्ष प्रबंधन ने इसे क्षेत्र के श्रेष्ठतम आतिथ्य स्थलों में स्थापित किया है।

दूरदर्शिता का प्रतिफल- सात वर्ष की उपलब्धियों का पर्व

चमड़िया ग्रुप के एमडी श्री राजेश चमड़िया जी ने मंच से अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा- 'स्वर्गीय पवन चमड़िया जी के आशीर्वाद, माता-पिता की प्रेरणा, हमारे स्टाफ की निष्ठा और जनता के प्रेम से आज हम इस मुकाम पर पहुंचे हैं। हमने केवल ईट-पत्थर से एक इमारत खड़ी की थी, किंतु इस इमारत को विलासा इंटरनेशनल की रोशनी आप सबने प्रदान की है। जब जनता होटल की सेवा और व्यवस्था की प्रशंसा करती है तो पिताजी की बातें याद आती हैं- 'सच्ची निष्ठा और अतिथि सेवा का कोई मोल नहीं होता।' पेट्रोल पंप से प्रारंभ हुआ सफर आज विलासा इंटरनेशनल तक पहुंचा है और आगे भी जारी रहेगा।' उनके शब्दों में केवल भाव नहीं थे, बल्कि संस्थापक के प्रति सम्मान और आगे बढ़ते रहने के संकल्प की ध्वनि भी थी।

सातवीं वर्षगांठ पर स्वच्छता नायकों का सम्मान- एक प्रेरणादायी उदाहरण

वर्षगांठ समारोह के दौरान एक अनूठा और संवेदनशील कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें नगर परिषद बुढ़ार के सफाई मित्रों को सम्मानित किया गया। आम तौर पर किसी भी आयोजन की सफलता में सफाई कर्मियों का योगदान अनमोल होता है, परंतु उन्हें विरले ही सम्मान का लाभ मिलता है। होटल विलासा इंटरनेशनल ने इसे ध्यान में रखते हुए सभी सफाई कर्मियों को पुरस्कार और अभिनंदन-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

एक सफाई मित्र ने भावुक होकर स्वर्गीय पवन चमड़िया जी को याद करते हुए बताया कि जब वे पेट्रोल पंप संभालते थे, तो अक्सर उन्हें चाय के लिए बुलाकर स्नेहपूर्वक कहा करते थे- 'तुम लोगों का काम सबसे महत्व का होता है। बिना थके सुबह से शाम तक पूरे नगर को स्वच्छ रखते हो। अपने लिए तो सभी जीते हैं, दूसरों के लिए जीना सीखना चाहिए—और तुम लोग यही कर रहे हो।' उन्होंने विनम्र आग्रह किया कि उनका नाम प्रकाशित न किया जाए, परंतु स्वर्गीय श्री पवन चमड़िया जी की बातें उन्होंने आज तक हृदय में सहेज कर रखी हैं।

कृतज्ञता और अभिवादन का भव्य आयोजन

समारोह में सहभागी सभी अतिथियों का होटल प्रबंधन द्वारा पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपस्थित रहे- श्री सुजीत सिंह चंदेल, श्री अजय सिंह, अरविंद नायक, श्री राजेंद्र गर्ग, यूनुस भाईजान, पीके भगत, अनिल सिंह, रोशन लाल तोदी, सोनू आहूजा, विकास सिंघानिया, ऋषि जैन, सुधीर श्रॉफ, संजय अग्रवाल, आनंद केडिया, विक्रम सिंह, अजय सिंघानिया सहित नगर के प्रबुद्धजन,

पत्रकार बंधु एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

होटल स्टाफ कि प्रस्तुति ने सभी का मनमोह लिया

इस दौरान होटल के स्टाफ द्वारा स्वागत नृत्य प्रस्तुति किया गया, जिसने सभी अतिथियों का मन मोह लिया। पूरा माहौल उल्लास, गरिमा और हृदयस्पर्शी भावनाओं से परिपूर्ण रहा।

समर्पित स्टाफ- सफलता की रीढ़

होटल विलासा इंटरनेशनल का स्टाफ इस सफलता की असली ऊर्जा है। सातवीं वर्षगांठ पर सभी कर्मचारियों ने केक काटकर एक-दूसरे को बधाई दी और आगे भी उत्कृष्ट सेवा देने का संकल्प लिया। इनमें प्रमुख रूप से रहे- सूर्यकांत (जनरल मैनेजर), मनजीत सिंह (वीरा), धर्मेंद्र द्विवेदी, विकास विश्वकर्मा, गौरव सिंह, महेंद्र मांझी, प्रभाकर घोषाल, वरिष्ठ स्टाफ अंजना साहू एवं अन्य सहयोगी।

समापन- कृतज्ञता का हृदयस्पर्शी संदेश

मनीष चमड़िया जी ने भावुक स्वरों में सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा- 'सभी सम्मानित अतिथि, पत्रकार बंधुओं, नगर परिषद के अधिकारीगण, सफाई मित्रों तथा होटल विलासा इंटरनेशनल के संपूर्ण स्टाफ के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूं। आपने अपना कीमती समय देकर जो सहयोग प्रदान किया है, वह अविस्मरणीय रहेगा। इसी एकता और विश्वास ने हमें आज फिर एक साथ खड़ा किया है। आने वाला नया वर्ष हम सभी के लिए मंगलमय हो—इसी कामना के साथ अग्रिम शुभकामनाएं।'

सपा सांसद धर्मेंद्र यादव ने सदन में उठाई आजमगढ़ की आवाज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

आजमगढ़। समाजवादी पार्टी के नेता, लोकसभा में मुख्य सचेतक, लोक लेखा समिति भारत के सदस्य,एवं सांसद आजमगढ़ धर्मेंद्र यादव ने आज लोकसभा में अपने संसदीय क्षेत्र की कुछ गंभीर समस्याओं को पुरजोर तरीके से उठाया। उन्होंने सरकार एवं मंत्री का ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा कि आजमगढ़ से वाराणसी का मार्ग जो लुंबिनी तक जाता है विगत 10 वर्षों से बना है परंतु आजमगढ़ वाराणसी के बीच जनपद जौनपुर में लगभग 18 किलोमीटर आज भी दो लेन हैं। जबकि बनारस से लेकर लुंबिनी तक यह बौद्ध सर्किट के अंतर्गत यह सड़क आती है, और इस 18 किलोमीटर चलने के लिए घंटों समय लग जाता है। उन्होंने मंत्री जी से इस छूटे हुए 18किलोमीटर सड़क को भी जल्द से जल्द फोर लेन करने का आग्रह किया।

इसके साथ ही उन्होंने माननीय मंत्री का ध्यान आकृष्ट करते हुए इस सड़क पर लगे कोटिला टोल प्लाजा का भी मामला उठाते हुए कहा कि उक्त टोल कर्मियों ने इतना आतंक मचा रखा है कि आजमगढ़ से आसपास के जो लिंक रोड बने हुए हैं उस पर टोल वालों ने लोहे का बैरियर लगा रखा है, जिससे आजमगढ़ के लोगों को बहुत परेशानी हो रही है और अगल बगल के लोग उन संपर्क मार्गों पर चल नहीं पा रहे हैं। इतना ही नहीं स्कूल की बसें भी संपर्क मार्गों पर नहीं चलने देते हैं जिससे छोटे छोटे बच्चों को भी इन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है उन्होंने मंत्री जी से ह.ि.द्व के इस आतंक को खत्म करवाने का भी अनुरोध किया

है। पूर्व में नियुक्त शिक्षकों के ऊपर टीईटी की अनिवार्यता पर भी उन्होंने कहा कि जिस तरह से टीईटी के माध्यम से पूरे देश के तकरीबन 25 लाख और अकेले उत्तर प्रदेश के 2 लाख से ज्यादा शिक्षक आज पूरी तरह से असुरक्षा के भाव में है। जबकि अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 के आने के बाद यह तय हुआ कि अब टीईटी परीक्षा के बाद ही कोई शिक्षण कार्य कर पाएगा। जबकि पहले से नियुक्त शिक्षकों के लिए प्रावधान रहा कि जो पहले के नियुक्त शिक्षक हैं उनको यह परीक्षा पास किए या नहीं किए उस समय की जो सेवा शर्तों के अनुरूप जो नियुक्ति मिली है उसी के अनुरूप वो सेवाएं करेंगे। लेकिन 1 सितंबर 2025 को माननीय सर्वोच्च न्यायालय का एक फैसला आया जिसमें पूर्व नियुक्त शिक्षकों को टेट पास करना अनिवार्य कर दिया है।उन्होंने इस बात के लिए कहा कि सर्वोच्च न्यायालय में केंद्र सरकार और राज्य सरकारों की कमजोर पैरवी के कारण आज देश के 25 लाख से ज्यादा शिक्षक और उनके परिवार पूरी तरह से परेशान है। उन्होंने कहा कि सभापति जी आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध है संविधान संशोधन लाकर या अध्यादेश लाकर देश के 25 लाख शिक्षकों और विशेष कर उत्तर प्रदेश के 2 लाख शिक्षकों का भविष्य सुरक्षित करे सरकार।

सरकारी योजना के नाम पर महिला के साथ हो गई 1.55 लाख रुपये की ठगी, कैसे?

लखनऊ। इंदिरानगर में प्रधानमंत्री योजना के तहत सोलर प्लांट लगाने का झांसा देकर 1.55 लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। पीड़ित सत्येंद्र कुमार ने गाजीपुर थाने में तहरीर दी। जिस पर पुलिस ने दीपक सक्सेना और अनुपम तिवारी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। सर्वोदय नगर मानस विहार कालोनी सत्येंद्र कुमार के मुताबिक जून 2025 में दीपक सक्सेना और अनुपम तिवारी अजय इलेक्ट्रिक शाप पर मिले। दीपक सक्सेना ने खुद को इंदिरानगर का निवासी और दुकान मालिक अजय वर्मा का पड़ोसी बताया। जबकि अनुपम तिवारी ने स्वयं को फर्म 'सोल्यूशन (एटी)' का प्रोपराइटर और दीपक को मैनेजर बताया। दोनों ने सोलर प्लांट लगाने का सरकारी योजना का हवाला देते हुए अपना कार्यालय 'रूप प्लाजा, मारूतीपुरम' बताया। आरोपितों को पीड़ित ने घर की छत दिखाई। जिस पर तीन किलोवाट का सोलर प्लांट लगाने की बात हुई। 1.80 लाख रुपये बात तय हुई। आरोपितों ने भरोसे में लेकर मकान के कागजात, आधार और बिजली बिल की कापी वाट्सएप से मंगाई। इसके बाद 10 जुलाई को 55,000 और 95,000 के दो चेक तथा 5,000 रुपये नकद श्रमिकों के नाम पर वसूले गए। दोनों चेक 11 और 16 जुलाई को फर्म 'सोल्यूशन (एटी)' के खाते में क्लियर हो गए। काम में देरी पर जब पीड़ित कार्यालय पहुंचा तो बिजली बिल में नाम सुधार की बात कहकर टाल दिया गया। पीड़ित ने स्वयं जुलाई व अगस्त में बिल संशोधित करवाकर दे दिया। बावजूद इसके कोई काम शुरू नहीं हुआ। फोन काल और मैसेज का जवाब धीरे-धीरे बंद होता गया।